गुथिरखिया

अंगेश गुंजन

अपना दिस सँ इएह जे :

☐ ई नाटक मैथिलीमे उपलब्ध रंगमंचक परम्परासँ फराक लोकक युगीन आवश्यकता आ' तज्जन्य प्रसंगवश प्रथम बेर चौबटिया-शैलीमे लिखल गेल अछि। समकालीन भारतीय भाषा, मुख्यतः हिन्दीमे चौबटिया नाटक विशेष लोकप्रिय आओर सार्थक विधाक रूपमे अपन सामाजिक भूमिकाक निर्वाहिमे महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि, जखनकि मैथिलीमे एहि प्रकारक कोनहुँ उपक्रम नहि। यद्यपि एकाधिक जागरूक नाटककार मैथिलीमे कथ्यक स्तर पर कार्यरत छथि परन्तु रंगमंचहिक परम्परा-परिधिमे घेराएल आ जे' कि भावुक रंगमंच मैथिलीमे बड़ पछुआयल तेँ बहुलांश प्रभावहीने जकाँ अछि। तेँ चौबटिया-नाट्य शैलीमे रचल गेल ई नाटक। यद्यपि एकरा प्रस्तुत करबामे लगयबला समय, अवधिक दृष्टियेँ बेसी छैक तथापि एकर सम्पूर्ण कथ्य आ प्रस्तुतिक शैली तेहन सहज, सुलभ आ लोकग्राही बनाओल गेलैक अछि जे थिक ई चौबटिये-नाटक मैथिलीमे पहिल प्रयास। एकर एकहि टा मामूली सन सीमा छैक जे एतेक टा नाटक कोनो चौबटिया पर ठाढ़े-ठाढ़ देखबामे दर्शककेँ किछु दिक्कति भऽ सकैत छैक। मुदा यदि पूर्ण तैयारीसँ एकरा प्रस्तुत कयल जाइक तँ लोक देखबा लेल बाध्य भऽ सकैत अछि।

☐ फराकसँ कहबाक आवश्यकता नहि जे चौबटिया नाटकक मूल विशेषता एकर युगीन कथ्य आर सहजहि सुलभ प्रस्तुति योग्य होयब थिक। बिना कोनो तम्फ-तम्फा, बिना कोनो अतिरिक्त प्रसाधन, वेश-भूषा तथा मंच-व्यवस्था केने, बड़ सरल आ' थोड़ व्यवस्थामे नाटक-तैयारी कऽ कऽ ओकरा

घाट पर, बाजार जाइत कि कार्यालयसँ घर घुरैत, कि रिक्शावला, ठेलावला, मजूर वा चिनिया बदाम आ' साबु बेचनिहार जन-साधारण प्रेक्षक-दर्शकके' अनायासहि सड़कक कातमे, बीच चौबट्टी पर वा कोनो नुक्कड़ पर उपलब्ध कराओल नाटक — सामान्य जनक बीचमे अभिनीत भऽ जयबाक से विशिष्ट क्षमता नुक्कड़ वा चौबटिया नाटकमे रहैत छैक।

☐ एहन नाटकक संवाद सोझा-सोझी साधारण वर्गक लोक चेतना धरि अनेरे उतरि सकबामे सहजहि सक्षम होइत छैक। रंगमंच एखनहुँ संभ्रान्तताक परिधिमे चकभाउर द' रहल अछि। मैथिलीक सेहो। तेँ चौबटिया नाटक कला-चेतनासँ भरल साधनहीन कलाकारक सस्त आ तेजगर माध्यम साबित होइछ जे करीब-करीब आर्थिक लागतसँ कलाकार आ संस्थाके एक दममे मुक्त रखैत छैक, जखन कि सम्बद्धता एकर सड़क, बाजार, स्कूल-कालेज सभक जन-सम्पर्कक बनि जाइत छैक। कम खर्चमे बेशी व्यापक गंहीर प्रभाव आर कला-प्रदर्शन। सांस्कृतिक चेतनाके प्रासंगिक बनबैमे सृजनात्मक गति देबामे प्रायः चौबटिया नाटक सन लोक-माध्यम आइ कोनहुँ आन साहित्य-कला-विधा नहि।

☐ लिखल त' ई नाटक बहुत पहिनहि गेल छल। एकर अभिनय प्रदर्शन सम्भव नहि भेल छल। तकरा मैथिलीक युवा कवि आ प्रतिभावान रंगकर्मी श्री विभूति आनन्द तथा हुनके किछु युवा, ८२ ई० क अमर नाथ झा जयन्ती समारोहमे अंजलि वर्मा, आनन्द मोहन, गणपति मल्लिक, सजल, धीरज, शंभुदेव, प्रेम कुमार, गणेश झा, अरविन्द कुमार, वासुकी नाथ झा, मन मोहन मिश्र, पशुपति नाथ विप्लवी तथा अरविन्द कुमार वर्मा कयलनि अपना निर्देशन तथा अभिनय सँ। तदर्थ स्वभाविके थिक जे हम विभूति जीक आ सभ कलाकारक खूब कृतज्ञ छियनि। पूर्वक नाम "चौबटिया पर" छल।

☐ एहि नाटकके' पुस्तकाकार प्रकाशनक जे अवसर चेतना समिति हमरा देलक अछि ताहि हेतु हम हार्दिक आभार मानैत छियनि विशेषतः समितिक, अध्यक्ष तथा सचिव, डॉ० अनिरुद्ध झा तथा श्री राजेन्द्र झाक।

☐ प्रेसक मुद्रक श्री देवेन्द्र झा, जीक जे स्नेह सहयोग हमरा भेटल अछि तदर्थ हुनको हम कृतज्ञ छी।

किछु आवश्यक संकेत :

एहि नाटकक विषयमे

☐ एकर शिल्प लचकदार छैक तेँ ई नाटक सोझ-साझ मंचसँ लऽ कऽ चौबट्टी वा गामक भगवती स्थानमे पर्यन्त सहजतापूर्वक कएल आ सकैत अछि।

☐ पहिल दृष्टिमे पात्र किछु बेशी बुझाइत छैक, मुदा से छैक नहि। किएक त' पात्र सभ सेहो दर्शकि'क भाग छैक। तेँ स्थान बदलि-बदलि कऽ अपन मंच-प्रवेश तथा बाहर जयबाक शैली मात्रसँ कथानकक अगिला आव-

श्यकता क अनुसार दोसर चरित्र सेहो बनि जाइत छैक । निर्देशकक तत्परता-क अपेक्षा अवश्ये रहतैक एहिमे ।

□ तें मामूली पोशाक-परिवर्तनसँ दर्शकमे मिलल अभिनेता दोहरा तेहरा भूमिका सहजहि कऽ लऽ जा सकैछ ।

□ नाटक मुख्यत: व्यंग्य छैक तें दर्शकके एहन ढंग कतहुसँ अखरतनि नहि, यदि निर्देशक चुस्तीसँ संवाद आ अभिनयक अलगरबक निर्वाह कऽ सकथि ।

□ ओना प्रमुखत: चारि युवक, तीन आदमी, एक टा वृद्ध, एक टा एक-सरुआ लोक तथा साँवरिया इयेह् एतबे पात्रक ई कथानक छैक । यदि अभिनेता उपलब्ध नहि हो तँ ।

□ नाटक स्थानीय समस्या सभक संदर्भमे सृजित भेल अछि । उपलब्ध भेला पर संवादमे मामूली परिवर्तनसँ स्त्री अभिनेता सेहो अनायास जोड़ल जा सकैत छैक । से स्थानीय जरूरत पर निर्भर छैक आ' निर्देशकीय दृष्टि पर । ओना दर्शक-समूहसँ सेहो नारी-पात्र खींचल जा सकैत छैक ।

□ स्थान-स्थान पर देल गेल दृश्यबंध जकाँ, दृश्य-रचना, अभिनयक विवरण निर्देशकके प्राथमिक सहयोग भरिक नेतसँ देल गेल छैक । निर्देशकीय दृष्टिके बाधा होइक तँ निर्देशक स्वतन्त्र मौलिक दृश्य रचना तथा अभिनय-भंगिमा तैयार कऽ लेथि ।

□ ई बात निर्देशकेक दृष्टि पर निर्भर छनि जे ओ एहि कथानकमे आयल सर्वांग कथ्यक आओर गंभीर प्रस्तुतिक पक्षमे एहि आलेख के बिना 'विकलांग' कयने, की आ' केहन परिवर्द्धन कऽ लैत छथि । ई करबाक हुनका पूरा स्वतन्त्रता छनि । मुदा हमरा (लेखक)सँ एक बेर एहि विषयमे गप्प कऽ लेथि—चिट्ठियेसँ भने ।

□ एहि नाटकमे 'मेक अप' कयलो जा सकैछ आ नहियो । जेहन अवसर ।

□ तकर नाम राखल गेल— **बुधिबधिया**

□ ई नाटक संपूर्ण नवतुरिआ
रंगकर्मी पीढ़ीक नाम—
जे जन साधारणक प्रति
कएल जा रहल व्यापक गंभीर राजनैतिक
नाटकके जनताक पक्षमे तैयार करबाक लेल
संकल्पित अछि ।...□

[कोनो एकटा चौबटिया । पृष्ठभूमिमे लाउड स्पीकर पर फिल्मी गाना । संभव हो तँ "पब्लिक है हम, सब जानते हैं" । तीन दिससँ आबि-आबिकऽ लोक जमा भऽ गेल छैक । लोकक भीड़ जकाँ । सबहक मुखाकृतिसँ बुझाइत छैक, जेना सभ उत्सुक हो, जे की होइ वला छैक एतऽ । दर्शकक आँखि ओहि दिस उठल, जाहि तरफसँ गीतक ध्वनि आबि रहल छैक । कनेक काल लोक किछु होयबाक आशामे ओम्हर देखैत रहैत छैक । तखन ओहि बीचसँ दू दिससँ दू व्यक्ति साधारण वेषभूषामे आगाँ अबैत अछि । ओहिमे एक हावभावसँ 'नेतानुमा' लगैत अछि आ दोसर कलाकार जकाँ । अपोक ओ परस्पर एक-दोसरकेँ देखैत अछि । तखन पहिल व्यक्ति, जे कलाकार सन बुझाइत अछि, दोसर केँ पुछैत छैक ।]

पहिल लोक : अहाँ एतऽ किएक ठाढ़ भेल छी ?

दोसर लोक : अहाँ एतऽ किएक ठाढ़ भेल छी ?

पहिल लोक : [एँड़ी पर ठाढ़ भऽ कऽ चौतरफा देखैत] हमरा जनैत ई सभ लोकनि जे एतऽ एकट्ठा छथि से सभ एक-दोसरासँ इएह जानऽ चाहैत छथि जे ओ एतऽ किएक अयलाहे ।

दोसर लोक : हमरा जनतबे से बात नहि छै ।

पहिल लोक : हमरा जनतबे सएह बात छै ।

दोसर लोक : तँ कहैत किएक ने छियनि ?

पहिल लोक : अहाँ कहि दियौन ।

दोसर लोक : नै, अहीं बता दियौक ।

पहिल लोक : नै-नै, अपने....

दोसर लोक : नै-नै, अपने....

दोसर लोक : आह, ई कतहु होअय, पहिने थोड़ेक अपने बता देल जाओ....

पहिल लोक : बेश पहिने कनीक अपने....

तेसर लोक : [एहि बीच एकटा क्यो जोरसँ कहैत छैक] चल भाय, चल एतऽ सँ। ई लोकनि पहिने अपने तँ पहिने अपने करैत रहताह आ भफटियाहीवाली गाड़ी छूटि जायत। चल चल। [ओ जयबाक लेल उद्यत होइछ एक-दू डेग बढ़ियो जाइत अछि। तखने पाछाँसँ क्यो जेना सोर करैत होइ]

पहिल लोक : औ भाय साहेब, कतऽ चलि देलियै औ, कनी थम्हू-थम्हू। कियेक विदा भऽ गेलौं औ?

[जाइत लोक ठमकि जाइत अछि। घूरिकऽ देखैत छैक। तखन पहिल आ दोसर लोक एक-दोसरा के देखैत अछि जेना किछु निश्चय कऽ रहल हो। किछु आगाँ बढ़ि कऽ दर्शक के सम्बोधित करैत अछि। पहिल लोक जेबीसँ एकटा मोचरायल कागजक टुकड़ी निकालैत अछि, जाहि पर लाल-लाल अक्षरमे किछु लिखल छैक। ओ कागज ऊपर उठाकऽ देखबैत बजैत अछि।]

पहिल लोक : हँ यौ भैयारी, कतऽ चललौं यौ? थम्हू कनी। ई जे हमरा हाथमे देखि रहल छी से कागजक टुकड़ी नै, एकटा पोस्टरक टुकड़ा छियै। एकटा बात होय वला छै। पड़ाय कियेक लगलौं अपने? कनेक धैर्य नै राखि सकै छी? प्रतीक्षा नै कऽ सकै छी? एकबैग टनटनाकऽ विदा कियेक भऽ गेलौं?

तेसर लोक : आर की यौ? अहाँ दुनू गोटयमे पहिने अपने तँ पहिने अपने बाझल छल। जे बात छै, यदि सत्ते छै तँ कहै ने किए जाइत छियै?

दोसर लोक : विचित्र बात यौ महाशय जी। ई पहिने अपने तँ पहिने अपने अहाँक दिल्ली टकसालक भाषा थिक। कोनो कि हमरे लोकनि पहिले-पहिल थोड़े कऽ रहल छी? वर्षक वर्ष सँ चलि आबि रहल अछि। आ एखन कतोक वर्ष ठाठसँ चलत [व्यंग्य सँ हँसैत जकाँ] आ, बूझल रहबाक बात? बूझल तऽ सबके सब बात रहैत छै, क्यो ककरो बतबैत फिरै छै?

तेसर लोक : कियेक ने बतबैत छैक। बिल्कुल बतबैत छै।

पहिल लोक : ओह, तखन भायजी एकटा बात कहल जाओ— अहाँ के महीन-वारी दरमाहा कते टाका भेटैये आ, बाइली आमदनी कतेक अछि?

तेसर लोक : [तमसाइत] विचित्र बेकूफी वला प्रश्न। एकदम मारि खाय वला गप्प करैत छी, अहाँ लोकनि। बीच चौबट्टी पर ठाढ़ कोनो भल-मानुष लोकके अहाँ लोकनि बेज्जति करैत छियैक। ओकर बाइली आमदनीक हिसाब पूछै छियैक, ठीके मारि खाय वला कार्य....

दोसर लोक : जरूर मारि खायवला कार्य करैत छी। किएक तँ अहाँ सन लोकक समाजमे रहै छी। दुर्भाग्यसँ कनी पढ़लो लिखल छी—दू अच्छर। अहाँ नहियों कहैत छी तैयो अहाँ सभक गुप्त बात के बुझि जाइ छी। मारि खाय वला काज तऽ करिते छी। कियेक तँ अहाँक बुधिबधिया सब ने बुझि जाइ छी। [तेसर लोक क्रोधे लाल भऽ जाइत छैक।]

पहिल लोक : अच्छा जाय दियौ। ई कहू जे अहाँ अपन तेसरकी सारिसँ बियाह कहिया कऽ रहल छी? [तेसर लोक अत्यन्त तामससँ ओकरा लग पहुँचि जाइत छैक, ओकर कुरता पकड़ि लैत छैक आ ऊँच स्वरे बजैत छैक।]

तेसर लोक : सार, बदमाश। एको रती बजबाक शिष्टाचार नहि। बेहुदा नहि तन। हम तोरा अदालतिमे ठाढ़ करबाकऽ छोड़ब। मान-हानिक मोकदिमा कऽ कऽ। एतेक रास लोक हमर गवाही अछि। एतेक लोकक बीचमे तों हमरा अपमानजनक कथा कहलऽ अछि। हम तोरा कोर्टमे ठाढ़ करब सार! लोथके चीन्हिकऽ बाजल करऽ। जनै छऽ जे हम के छी? एखन तोरा बुझले नहि छऽ। बापक बियाह पितिया सगाइ देखा देलापर बुझबहक। व्यक्ति चीन्हि कऽ...। [दुनू गोटय एहि क्रोधित तेसर लोकके देखैत छैक। मुदा डरायल नहि अछि। दोसर लोक कहैत छै।]

दोसर लोक : व्यक्ति चीन्हिइबऽ ! ठीके तँ । अपनहुँ लोकेक श्रेणीक लोक छिऐ ? [व्यंग्यसँ । पुनः रहस्य खोलबाक उपक्रम करैत जकाँ] बात अपने जनैत छिऐ, तैयो एतेक रास लोकसँ नुकयेँ छी । अहाँ के खूब बाइली आमदनियों अछि आ अपन तेसरकी सारि सँ सेहो, इएह दु- ारि दिनमे बियाहो करऽ जा रहल छी । परन्तु लोक सबसँ नुकबैत छी । आ हम मुफ्त कहै छी तँ मोट गलासँ धमकी दैत छी । अहाँ भोम्हागंख छी ।

तेसर लोक : हे देख ले... हे खबरदार, चीन्हि राखऽ... हमरा....

दोसर लोक : हँ हँ, इएह ने कहब जे अहाँक फलां सम्बन्धी पुलिस विभागक बड़का आफिसर छथि तँ फिल्लां सम्बन्धी उद्योग विभागक मंत्री छथि...अपनेक समधि फलां क्षेत्रक एम० एल० ए० छथि, हुनका मुख्यमंत्री जी प्राणोसँ बेसी मानैत छथिन । एतेक धरि जे कखनो यदि अपनेक समधि के लघी लागि जाइत छनि आ दुइयो मिनटक खातिर ओ ड्राइंग-रूमसँ बाहर चलि जाइत छथिन तँ....

पहिल लोक : [बीचहिमे] मुख्य मंत्री जी आकुल-व्याकुल भऽ कऽ तानऽ लगैत छथिन—"नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूँढ़ूँ रे साँवरिया ! पिया-पिया रटते रटते हो गइ रे बावरिया.... ." मुख्य मंत्रीजी सस्वर गाबऽ लगैत छथिन । गाबि-गाबिकऽ तानऽ लगैत छथिन—नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूँढ़ूँ रे साँवरिया। [तुनू गोटय मिलिकऽ ई गीत, अपन-अपन दहिना हाथ कान पर दऽ बामा हाथ तिरछा कऽ कऽ ऊपर दिस उठौने गाबऽ लगैत अछि । गीत करीब एक मिनट धरि चलैत रहैत छैक । कि तावतहि भीड़के चीड़ैत एकटा व्यक्ति प्रवेश करैत अछि। ओ खाधीक चरिखाना लुंगी पहिरने अछि आ काज कएल बेलदार कुरता । तकर नाम साँवरिया छैक]

साँवरिया : साँवरिया के बजा रहल छी ? इएह छी हम । हम आबि गेलौं । हम आबि गेलौं । की बात छैक ? हम तँ बीड़ी फीकैत रही कि तोहर सुरीलगर आवाज टेकल कानमे आ हम लत्ते-फत्ते दौड़िकऽ आबि गेलौं । हमरा बुझल अछि जे हम फिल्मी गीत जकाँ लोकप्रिय छी लोकमे । स्मरण करितहि उपस्थित भऽ गेलहुँ । हमरा कानमे तँ खाली लता मुंगेसकरक आवाज पड़ल तानय । उपस्थित !

दोसर लोक : उपस्थित छी तँ फूकू चूल्हि नृत्तमाधवजी ! हद्द बात भेल ! एकटा फिल्मी गीतक पाँती पर अपरथाँत दौड़ल चल अयलाह । कोनो काज-धंधा नहि छऽ ? [क्षण भरि रुकि कऽ] अयलौहेँ तँ एतऽ अपनेक स्वागतक कोनो तैयारी नहि अछि । गेल जाओ, मुख्य मंत्री जी ताकि रहल छथि । ओतहि जाउ । [साँवरिया मुँहमे बीड़ी लगबैत अछि आ स्वच्छ जकाँ बाजऽ लगैत अछि]

साँवरिया : काज-धंधा ! की, जनताक कोनो विरह गीत पर जनताक बीचमे तुरन्त उपस्थित भऽ गेनाय कोनो काज-धंधा नहि भेलै ? [सोचैत क्रमेँ] आ' मुख्य मंत्री जी ? ओ तँ दिल्ली गेल छथि ।

दोसर लोक : दिल्ली गेल छथि [किछु चिंतित जकाँ होइत]

साँवरिया : हँ हँ ! एहि हफ्तामे दिल्ली कहाँ जा सकल छलाथिनहेँ । आइए तऽ भोरे रेडियो कहलकैये । हँ, आइये त' । हमरा बिल्कुल नीक जकाँ स्मरण अछि । रेडियो कहने छलै जे कोनो प्रार्थना-सभा करऽ गेलाहुए । ओम्हुरेसँ चल जयता बम्बइ । ओतऽ हुनका अखिल भारतीय पूँजी विकास संघक अध्यक्ष सँ भेंट करबाक छनि ।

दोसर लोक : अच्छाऽ !

साँवरिया : हँ ! [अपने पर मुग्ध होइत] रेडियोक बात तँ हमरा तुरंत कंठस्थ भऽ जाइए । एकदम ओहिना छन । कयाहुसँ किछु पुछि लियऽ । [दर्शक दिसि देखैत, जेना प्रशंसाक अपेक्षा करैत अछि] कंठस्थ अछि ।

पहिल लोक : जेना आइ की सब याद कयलौहेँ ?

साँवरिया : आव सौंसे देश भरिक ६९०८१ छोट-पैघ सभ अस्पतालक रोगीक विषयमे, ओकरा परिवार वला सभक वास्ते नित्य दिन स्वास्थ्य बुलेटिन जारी कयल जयतै ।

बयो एक गोटय : [उत्साह मे] की कहलियै ! सभ अस्पतालक ? राजनगरी अस्पतालक भाय साहेब ? हमरो बाप दुखित छथि कएक दिनसँ ! तखन तऽ हुनको विषयमे छपतनि ? [जेना निश्चिन्त होइत] कतेक पैघ चिन्ता खतम भऽ जाइत जे बाबू नीके छथि। हमरा तँ गलिफवा छुट्टीए ने दैए जे जा कऽ एक बेर देखियो अबितियनि। [एक क्षण चुप रहि साँवरिया के पुछैत छैक] की यौ आब सब रोगीक समाचार होअऽ लगलै रेडियो पर ? गरीबो-गुरबाक....?

साँवरिया : तखन की ? रेडियो बजलैए। [ओकरा डँटैत जकाँ] हम कि कोनो अपना दिससँ गढ़ि कऽ कहि रहल छियऽ तोरा ? [आ तखने बीचहिमे जेना चिन्तित होइत कहऽ लगैत छैक] ''हे प्रभो ! बड़ अनर्थ भऽ जेतै ! अन्हार ! महान्ध-कार। हे ईश्वर एतेक पैघ राष्ट्र पर एतेक पैघ अन्धकार ! [क्षण भरि चुप रहि कऽ] हमरा लोकनिक एतेक पैघ महान नेताक, एखन एहन समयमे, देशसँ उठि जायब... ओह, हमर तँ हृदय टुकड़ी-टुकड़ी भऽ रहल अछि। (जेना शून्यमे बौआइत) अन्धकारक एक महासमुद्र ! कारी महान्धकार....

दोसर लोक : केहन अन्धकार बंधुवर ! अहाँ बड़ व्याकुल भऽ गेलौं। चित्त स्थिर करू। एकटा बीड़ी लेसि लियऽ। संभव छै....संभव छै जे....

साँवरिया : किछु संभव नै छै एतऽ (भर्त्सनाक स्वरमे) एतऽ एखन देशक एतेक रास लोक उपस्थित छथि मुदा एक भोरे जारी कएल गेल बम्बै अस्पतालक बुलेटिनक बारेमे एकटा पब्लिक प्रार्थना कऽ कऽ अपन एहि नेताक रोगी शरीरकेँ दीर्घायु बनयबाक प्रार्थना नहि कऽ सकैत छथि। धिक्कार ! एक हजार बेर धिक्कार अछि। चन्दा-बेहरी फल-फल-हरीक तँ कथा फराक, एहन महान आत्माक प्राण रक्षाक लेल हमरा सब प्रार्थना तक नहि कऽ सकैत छी। (दर्शक केँ) भला दिल्ली समाचारक अखिल भारतीय सूचीमे एकहु बेर अपना शहरक नाम आयल ?

बयो एक गोटय : कियैक नै आयल ? एतऽ नव उद्योगपति लोकनिक सम्मेलन जे भेलए, तकर ?

साँवरिया : अरे नै यौ भोंदूमल जी ! हमरा लोकनि अपन परम प्रिय नेताक औंटा बढ़यबा लेल—महान नेताक औंटा बढ़यबा लेल प्रार्थना कयलहुँ ? कत्तहु ? नागरिक प्रार्थना ? सात समुद्र पार अमेरिका-इंगलैंडसँ प्रार्थना सभाक समाचार धनायन आबि गेलैक ...आ हमरा लोकनि....। हम पूछै छी, कत्तहु प्रार्थना नहि कऽ सकैत छी ? ठामहि बजरंगबलीए जीक मंदिरमे ? वा कत्तहु आने ठाम ? इतिहास माफी देत ? कहियो ? ओ तऽ पॉलिटिक्स नहि छथि, सभक उदय होइक तकरे लेल ओ अपनाकेँ होम करैत-करैत आइ एना छथि !

किछु दर्शक : हँ, हँ, करी। सबले प्रार्थना कैये ली। बल्कि हमरा लोकनिक प्रार्थना अछि जे अपने कृपा कए एहि प्रार्थना-सभाक सभापति बनियौ [दर्शक साँवरिया के कहैत छनि]

साँवरिया : [ओहि आग्रह के मोजर नहि दैत जकाँ] समय तँ ककरो बाट नहि देखैत छै। कत्तहु जँ समयक निर्णय भऽ गेलै आइ ? ई नश्वर शरीरे कत्तहु कालक कउर बनि गेल तँ प्रार्थना कोन काजक ?

किछु दर्शक : नहि-नहि। विलंब कियेक ? भैये जाय। [पृष्ठभूमिसँ टेप द्वारा एक स्वरमे गीता पाठ, एक स्वरमे बाइबिल, एक स्वरमे कुरानशरीफ, एक स्वरमे दुर्गा सप्तशती तथा एक स्वरमे हनुमान चालीसाक पाठ ध्वनि। ओहीसँ स्वर उभरैत अछि जेना आकाश दिससँ। बेसी लोकक चेहरा, आँखि ऊपर दिस टाँगल जकाँ।]

एक टा वृद्ध स्वर : (दुःखताह परन्तु भारी) आह, प्रभो ! छहरदेवाली तँ चारू कात बनि गेल अछि, तकरा पर नोकगर-नोकगर काँचक टुकड़ी सभ सिमेंट दऽ कऽ मजगूत कऽ देबाक योजना छल। चूनसँ चक-चक कऽ मन माफिक डीरया सेहो कहाँ सकलहुँ। अगल-बगलमे करोटन आ युकिलिप्टसक

नव जातिक गाछ सब रोपबाक छल। नहि रोपबा सकलहुँ फूल-फल सब। प्रभो! एहि दुखी आ' हताश समाज कें, आस्था टूटल निराश समाज कें एखन किछु वर्ष हमर सेवाक आर आवश्यकता छलैक। भगवान! हम अंतिम समय मे गरीब समाजक किछु आर सेवा करऽ चाहैत छी, ईश्वर, हम एहि समाजक वास्ते क्रान्तिक नींव पक्का कइए कऽ ई शरीर त्यागऽ चाहैत छी।....

पहिल युवक : (बीचहि मे) चलंक नहि बनू। बहुत दिनसँ ई शहर निराहार अछि।

दोसर युवक : एकरा देह पर एक बीत वस्त्र नहि, एकर अंग-अंग उघार अछि।

तेसर युवक : बुझू जे ई शहर सुखायल गंगाक धार अछि।

पहिल युवक : नहयबा योग्य नहि।

दोसर युवक : पीबाक योग्य नहि।

तेसर युवक : गहूम कि धान किछु उपजयबा योग्य नहि।

एकटा दर्शक : (किछु आगाँ बढ़ैत] अहाँ लोकनिक परिचय विद्यार्थी! बोली बड़ साफ अछि? कोन आश्रम छी? भीक बाजि लैत छी।

पहिल युवक : जी हँ। हमरा लोकनि पूर्व जन्मक पूर्वहि जन्मसँ नेता-गिरीक वृत्ति करैत आबि रहल छी। हमरा लोकनिक एक-एक जन्म पाँच वर्षक होइत अछि। कतेक जन्म भेलै, जोड़ि लेल जाओ। पूर्वहु जन्मक पूर्व जन्म सँ हमरा नस-नसमे नेताक वास अछि। बस एतबे बूझि लेल जाओ जे हमर ई शरीर नहि; पूरा विधायक-निवास अछि।

दोसर युवक : सत्य के सूगा जकाँ पोसि कऽ, ओकरा द्वारा गवहाक बोली मे लोक सब के प्रशिक्षित करबाक हमरा लोकनिक खानदानी पेशा अछि।

तेसर युवक : (ओहि दर्शककेँ पुछैत) छोड़ू! अछि कोनो कारबार आ कि कोनो सत्य अहाँ लग? तऽ दियऽ। तुरन्त ओकरा

सूगा बना दैत छी। गवहाक मुँहे नैतिक आचरण पढ़ा कऽ देखा दैत छी मिनटे भरिमे। (चुटकी बजबैत अछि मदारी सब जकाँ। ओकर एहि प्रस्ताव पर दुनू लोक अपन-अपन बगली हथोड़ये। फेर निश्चिन्त भऽ जाइत अछि आ' पहिल लोक बजैत छैक]

पहिल लोक : स्वच्छ रहल! हमर सत्य पहिनहि सूगा बनि गेल।

दोसर लोक : आ हमर सत्य थाकि हारि कऽ निसभेर सुति गेल।

पहिल युवक : [बीचहिमे जेना पुछैत छैक] भाय साहब घड़ीमे कते बाजि गेल? [जेना सभ जयबा लेल, अपना अपनी कऽ उद्यत भऽ उठैये एक आध चलबाक उपक्रम करैत अछि। दोसर लोक बुधियारीक संग ओतऽ सँ चलि जाइत छैक]

पहिल लोक : हाँ, हाँ! किएक जा रहल छी भायजी? देश-दशा पर एक रत्ती विचार केने जाउ। भारतेन्दु बाबू.... शिखीपट्टी बला नहि, काशीक भारतेन्दु बाबू हिंदी-कवि, कहि गेल छथि [सस्वर]

आवहु सब मिलि रोवहु भारत भाई,
हा हा, भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

[पृष्ठभूमि सँ जेना ककरो अति आर्त भऽ कऽ कनबाक स्वर सुनाइ पड़ैत छैक। आ पहिल लोक दोहरबैत छैक]

हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई
आवहु सब मिलि रोवहु ....

दोसर लोक : [किञ्चित वेश परिवर्त्तनक संग प्रवेश करैत कहैत छैक] तेँ कानऽ लागू जोर-जोर सँ, छाती पीटि-पीटि कऽ कानऽ लागू जे जनता के बूझल भऽ जाए, भारत दुर्दशा मे अछि आ तखन फेर जनता सेहो हेंज बना-बना कऽ हाक्रोश करऽ लागय जे हा हा भारत दुर्दशा....

पहिल लोक : तऽ की हम गलती कहि रहल छी जे भारत दुर्दशामे अछि?

दोसर लोक : हे पब्लिक के भोतियबियौ नहि। कहि दैत छी। भ्रम नहि पसारू लोकक मनमे। जनै छियै भ्रम पसारब सेहो दंडनीय अपराध होइत छैक ?

पहिल लोक : एहिमे भ्रम पसारबाक कोन गप्प उठा देलियै अहाँ ?

दोसर लोक : तँ अहाँ हाथमे हरिवंशक पोथी उठा कऽ कहू तँ जे ई कविता, भारतक दुर्दशा बला गप्प भारतेन्दु कवि अंगरेज बहादुर सँ जे देश तबाह छल ताहिपर लिखने आ छपौने रहथि कि नहि ? जखन कि आब ककरो सँ ई गप्प नुकायल छैक जे अंगरेजबा सब अहाँकेँ स्वतन्त्रताक मुकुट पहिरा कऽ अनमन तहिना चल गेल एतऽसँ, जेना कोनो गृहस्थ रामलीलामे हनुमानकेँ मुकुट पहिरा कऽ मंचपर सँ चलि जाइए ! अंगरेज तँ अपना देश कहिया ने घुरि गेल लंडन। कतऽ सूतल रहै छी यौ महाशय ?

पहिल लोक : के हम कि अहाँ ? सूतल के छल, कि अछि ? की सभो चलि गेल अंगरेज एतऽ सँ ? [हँसी करैत जकाँ] आ कि, भारतक दुर्दशा कि अंगरेज सब कऽ कऽ गेलैए ? उठायब हरिवंश ? अहाँ कहू तँ एतेक-एतेक वर्षक बास्ते ओ कि ओकरा हिसाबसँ दुर्दशा कऽ कऽ चलि गेलै ? बुझि पड़ैये जेना दुर्दशा उत्पादनक बड़का-बड़का कल-कारखाना बैसा कऽ चलि गेलै ओ सब।

दोसर लोक : [सोचैत जकाँ] हँ यौ! आ आब एहि दुर्दशाक हमरा लोकनि स्वयं अपने जिम्मेदार छी।

पहिल लोक : मुदा अंगरेज लोकनि जे अपन किछु नाबा-सन्तान छोड़ि गेल छथि एतऽ। ओ लोकनि आब अपन अपन देश के कारी करबा कऽ आँखिक पुतरी के कारी बनबाकऽ आइ हमरा सभक दुर्दशा नहि करबा रहल छथि। बेचारी जनता जे छुच्छे हिन्दी वा देसी भाषा मात्र जनैये, एको रत्ती बुझि पाबि रहल अछि अपन दुर्दशा ? अपना पर

होइत एहेन-एहेन विपत्ति, तकलीफ आ अत्याचार ? दुर्दशा ?

दोसर लोक : [खौंझाइत जकाँ] दुर्दशाक अर्थ की होइत छैक ? की माने दुर्दशाक ? जे मन भेल, एक टा कोनो शब्द सीख लेलहुँ आ लगलहुँ घोखऽ—दुर्दशा? बुड़िबकक कोनो जबाब छैक ? [जेना पहिल लोक के आँखिसँ तौलैत] एखबार पढ़ैत छी ?

पहिल लोक : नहि।

दोसर लोक : नहि। रेडियो सुनैत छी ?

पहिल लोक : नहि।

दोसर लोक : नहि। फिल्म देखैत छी ?

पहिल लोक : नहि।

दोसर लोक : नहि। तखन तँ कनबे करब—हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई। इएह परिस्थिति अछि। सूचना आ जन-संचारक सब टा उपलब्ध साधन, तकरा सभसँ कटि कऽ रहब अन्हरी गायक अलगे बथान बनल आ' समय अयलापर एहिना शुद्ध-साद्ध जनता के मति मारि कऽ ओकर बाट भोतियबैत रहब। कहियो सोचबाक कष्ट करैत छियै जे अहाँ लोकनि जनतामे कतेक भ्रमजालो पसारैत छियै ? दुर्दशा। हुँह। अरे दुर्दशा छै तऽ बन्द कऽ लियऽ, के रोकैये ? दुर्दशा....

पहिल लोक : की भ्रमजाली यौ ? की ? दुर्दशा नहि छैक।

दोसर लोक : दुर्दशा छैक तँ बदलि ने लियऽ। दुर्दशा-दुर्दशा चिचियाइत रहने तँ नहि हएत। इएह हालति अछि अहाँ सभ सन पढ़ल लिखल सन देखाइत लोक सभक, एहेन अबंड गैर जिम्मेदार लोक....

पहिल लोक : गैर जिम्मेदार नै बेरोजगार कहियौ बेरोजगार। सत्ता के कियैक बदलि दैत छियै ? सरकारी नोकरीक लेल

वयस समाप्त। आब आमिलक छीर मे भरल माछ जकाँ फूलतै हमरा सभक भविष्य....

दोसर लोक : धन्न। राष्ट्रीय प्रगति आ' उत्थानक विषयमे किंचितो सामान्य ज्ञान नहि अछि अहाँकें। धिक्कार! कतेक लज्जाक बात? सामान्य ज्ञानक एहन अभाव?

क्यो एक गोटय : अपने ज्ञान बाँटब कि आब?

दोसर लोक : हँ यौ। धिक्कार, जखन कि जन-जन के सामान्य ज्ञान देबाक वास्ते सभटा सिनेमा हालमे बढ़ियाँ फोटो देखयबाक एतेक सुन्दर व्यवस्था कएल गेल छैक। प्रगतिक, आर्थिक सभटा उपलब्धिक समाचार-विलक्षण, विलक्षण फोटो सब नित्य दिन देखयबाक सरकारी प्रबन्ध फिट कयल गेल छैक। कोनहु सिनेमा हाल मे तीन बज्जीसँ लऽ नौ बज्जी, कोनो सिनेमा मे जाले बढ़यबाक व्यौंत कएल गेलैक अछि। सभ टा क्रांतिकारी विकास-कार्यक एक सँ एक आकर्षक फोटो सब...जनताकेँ ज्ञान बढ़यबामे कतेक खर्चा छैक सरकारके प्रतिदिन...? फेर एतेक रास अखबार सब...

पहिल लोक : [अबोध जिज्ञासाक स्वर] ऐं यौ, ओ जे सिनेमा सबमे जे बड़का-बड़का हरियर-पीयर नक्शा सब देखाओल जाइत छैक आ ताहिपर एक टा हथकट्टा छड़ी सँ घुमैत रहैत छैक आ पाछाँ सँ सुरीलगर मुँहसँ कोनो छौंड़ी रचि-रचि कऽ बजैत रहैत छैक जे फल्लाँ बान्ह बन्हा गेलै आब ...जकर उद्घाटन सिंचाई मंत्री...

दोसर लोक : [आह्लादित होइत] बिल्कुल्ल? बिल्कुल्ल। वैह।

पहिल लोक : वैह सब ने? जाहिमे कए-कए मोनक पट्टा अपना अपना पीठ पर लदने ठेहुन पर नाक रगड़ैत जकाँ घामे पसीने नहायल सैकड़ाक सैकड़ा मजूर सब माल गाड़ीक सैकड़ो डिब्बामे बोरा सब लदैत रहैत छैक आ देखि-देखि कऽ मोने मोन बड़ हर्षित होइत रहैये जे आब अपना देशमे एतेक-एतेक जाउर-गहूम उपजऽ लागल? वाह् रे वाह्! एतेक रास अन्न। अपना देशमे?

दोसर लोक : हँ हँ। वैह फिल्म....

पहिल लोक : भाय साहेब यौ, से ई भरलो मालगाड़ी कतऽ पहुँचायऽ जाइत छैक सब टा अन्न? कोन गाम कऽ? [सबके देखैत पुछैत]

क्यो एक गोटय : जानथि वैद्यनाथ! हमरा नहि बूझल अछि। (कहैत ओ पहिने दोसर लोक फेर आनके देखैत छैक एहि आशासँ जे कनहु ओकरा सभ मे केकरो बूझल होइक]

क्यो दोसर गोटय : जनौ मण्डल, हमरो नहि बूझल अछि। हम तँ काल्हिये राशनो दोकान पहोंचे रहियै तँ कोटावला कहलकै जे इस मास का राशन नहीं आया है।

क्यो एक गोटय : वाह्-वाह्. पछिलो मास तँ वैह कहिकऽ घुरौने छलैये— इस मास का राशन....

दोसर लोक : [खौंझाइत जकाँ] बस धऽ लेलौं एकटा गीड़ह्। ओ मालगाड़ीक सभ टा अन्न देशेमे रहैत छैक कि कोनो धारमे दहा देल जाइत छैक? एतबो सोचबाक विवेक नहि?

क्यो एक गोटय : भाय साहेब, कोन जिलामे छै से देश?

दोसर लोक : औ बुड़ि, देश! देश! हुँह्! छिनका लेखे जिलामे देश होइत छनि! एकटा देशमे असंख्य जिला होइत छैक। सभटा देशे छैक।

क्यो दोसर गोटय : तखन तऽ हमरो गाम देशेमे भेलै?

क्यो एक गोटय : कोन गाम रहैत छी? माने जे जिनका कनस्टीच्युएंसी मे पड़ैये?

क्यो दोसर गोटय : (डरायल जकाँ) बरिसक जयमन्त ठाकुरक....

क्यो एक गोटय : देशसँ बाहर अछि।

क्यो दोसर गोटय : से कियेक?

क्यो एक गोटय : बेचारे पीच-चापि कऽ एमैल्ले टा छथि। कम सँ कम मंत्री रहय तकरे नाम टा देशमे गिनहा कएल जाइत छैक।

क्यो दोसर गोटय : तखन ?

क्यो एक गोटय : इएह भाइ साहेब कहताह। [दोसर लोक सँ पुछैत] भाय साहेब एतेक रास मालगाड़ीक डिब्बा सब, चाउर गहुमसँ कथक वास्ते कसाइत छैक ?

दोसर लोक : अहाँ लोकनि माँझे कपार बला व्यक्ति बुझा रहल छी। छुच्छे अन्ने टा होइत छैक जीवनक लेल ? इनारक बेंग सब !

पहिल लोक : तखन कथीक लेल आर ?

दोसर लोक : कल कारखानाक लेल बड़का - बड़का विशाल प्रोजेक्ट सब....परमाणु ऊर्जाक प्रोजेक्ट....तखन यूरेनियम उपजयबाक भारी प्रोजेक्ट....

पहिल लोक : परमाणु ऊर्जा आ यूरेनियम की होइत छैक भाय साहेब ? उपजा बढ़यबा वास्ते खेतमे जे यूरिया खाद जकाँ देल जाइत छैक सैह की ? ई यूरेनियम की होइत छैक ?

दोसर लोक : ले। बज्र बुड़ि छऽ हौ। यूरेनियम की होइत छैक ? [थाक काल भर्त्सनापूर्वक देखैत फेर पहिल लोक पर केन्द्रित होइत] यूरेनियम खाद होइत छैक ? हुह ! [पुनः सबके देखैत, दर्शके मे सँ ककरो सम्बोधित करैत जकाँ] विज्ञान एतेक उन्नति कऽ गेल ! इएह देखल जाओ जे चन्द्रमा-सूरज पर चढ़ि गेल। आ तोरा एतबो नहि बूझल छऽ जे यूरेनियम की होइत छैक ? धिक्कार कहबाक चाही !

पहिल लोक : एहिमे धिक्कारै किएक छी यौ ? नहि बूझल अछि तेँ पुछैत छी। बुझा दिअऽ।

दोसर लोक : [ओकरा पर कृपापूर्ण नजरि दैत दर्शक केँ कहैत छैक]

भाय साहेब लोकनि, अपने लोकनि मे सँ एतऽ क्यो सज्जन विज्ञानक विद्वान छी ? [फेर तैना तत्काल अपन गलती सुधारैत] अरे, माफ करब। भला विद्वान, एहि चौबटिया पर की करऽ औताह ? ओ तँ अपना ड्राइंग—रूममे गद्दगर विछान पर मसलंगमे ओंगठल अमुका एखबार पढ़ि रहल हेताह। वा संभव जे शहरसँ बाहर गेल होथि कोनो पीएच० डी० डी० लिटक भाइभा लेबऽ त्रिवेन्द्रम वा दिल्ली - विदेश मंत्रालयमे विदेश यात्राक गोटी बैसबऽ। [व्यंग्य सँ] भला एहि असभ्य भीड़ भाड़क चौबटिया पर विद्वान की करऽ औताह ?

पहिल लोक : से की भाय साहेब ? केहन गोटी यौ ?

दोसर लोक : हूँ यौ लाख गोटी छैक। कोनो एक टा ? [क्षणिक चुप्पी] एहि चौबटिया पर असभ्य भीड़-भाड़मे ओ किएक औताह ? [किंचित चिंता करैत] दोसर जे, एहि भीड़-भाड़ मे पाकेट मार आ उचक्को लोक सब तँ रहैत छैक। चौबट्टी तँ तकरे लोकनिक !

क्यो एक गोटय : (क्रोध सँ) एँ यौ हमरा लोकनि असभ्य छी, उचक्का छी, जे क्यो एहि चौबटिया पर ठाढ़ छी ?

दोसर लोक : (अपन बात जोड़ैत) किऐक औताह ओ एहि चौबट्टी पर, ततऽ सब छैक खोमचा वाला, रिक्शावला, छोटछिन दोकानदार, पैदल लोक वा अपना ऑफिससँ घुरैत किरानी मुंशी लोक वा कोनो इन्टरव्यूसँ निराश हताश घुरैत कोनो बेरोजगार एकसर नौजवान।

क्यो एक गोटय : (गारि पढ़बाक मुद्रामे) आर की ? चौबटिया कोनो जगह थिक भलमानुष लोकनिक लेल ? कहलो गेलए जे

'ओ नर नहि भिखारि थिक,
जे चौबटिया जाय
खोआ मलिद्दा छोड़ि कऽ
झिल्ली मुरही खाय... ....   (गबैत कहैत छैक)

तेसर लोक : उचिते ! एतऽ कियेक अबैं जयताह् महान आ विद्वान लोक ? (फेर किछु सोचैत जकाँ, मन पाड़ैत) हँ भाय साहेब ओकनि, तैं छी वयो गोटय साइन्सक लोक जे एखन महान विद्वान नहि भेल होइ आ' युरेनियमक विषयमे किछु ज्ञानक गप्प बुझा सकी, ? कयो भाय ? कयो बाप-पित्ती, कका-ददा कयो ? युरेनियम ...

चारिम युवक : (अचानक जोर सँ) हे इएह् हम बुझा दैत छी। (ओ आगाँ बढ़ि कऽ अबैत छैक) ई एखन धरि प्राप्त ऊर्जा पदार्थमे सबसँ महग अछि। एकर प्रयोग समस्त मनुष्यताक खिलाफ कएल जाय बला अछि। युरेनियमक राजनैतिक व्यवहार कएल जायत। युरेनियम अबैबला मनुखक शत्रु थिक। (कहैत कहैत युवक अपन माथ धऽ लैए आ अशक्त जकाँ ओतहि बैसऽ लगैए किछु गोटे ओकरा पकड़ैत-सम्हारैत पुछऽ लगैत छथिन—की भेलं की भेलं ? मुदा ओ युवक अचेत जकाँ भ' जाइत छैक। काम्हु पर सँ ओकर ओरा ससरि जाइत छैक आ जकरा, ओकरे सेवामे लागल एक गोटय, बड़ चलाकी सँ लऽकऽ एम्हर-ओम्हर बेखैत ससरि जाइत छैक आ परिचालित पोशाकमे धोती-कुर्तामे उपस्थित होइत छैक।)

साँवरिया : चिन्ता धुनि करऽ। नै घबड़ा ! तोरा किछु नहि भेलऽ हे। तोरा किछु नहि भेलऽ ...

पहिल लोक : विचित्रे गप्प थी महाशय ! ई युवक ओंघड़ाकऽ माटिपर खसि पड़लैए। अचेत छैक आ अहाँ फरमा रहल छी जे किछु ने भेलैए। कमाल !

साँवरिया : अहूँ अनेरे घबराइत छी। एकरा सभो किछु नहि भेलैए। ई युरेनियमक विषयमे बर्जल-बर्जल उत्तेजनामे आबिकऽ खसि पड़लए। एकरा आर किछु नहि भेलैए।

चारिम युवक : (अचानक बाजऽ लगैत छैक) हँ हँ, युरेनियमक विषयमे। हम ठीक-ठीक जबाब देने छलियैक। इन्टरव्युसँ निकलि कऽ सबसँ पहिल काज हम इएह् कयलौं। युरेनियमेक

तकलौं। आ' जे कि सत्य छैक अमेरिकेमे सबसँ बेसी भेटल। हमर जवाब एकदम ठीक छल। (ओ हकमैत जकाँ छैक)

साँवरिया : की जवाब ठीक छल ? कोन सवालक जवाब ?

चारिम युवक : सब टा प्रश्नक उत्तर ठीक छल हमर। मुदा ओ विद्वान सब हमरा दुत्कारलक, हमर आत्मबल के तोड़ि कऽ धऽ देलक। कहलक धिक्कार ! एम० एस सी० कऽ चुकल छी अहाँ, काल्हि कोनो कालेजमे हजारक हजार विद्यार्थी पराएब प्रोफेसर बनब। विद्यार्थी के की परसबै खाक-पाथर।

कयो एक गोटय : पढ़ाएब कि पराएब यौ ? विद्वान साहेब की पुछलनि चराएब ?

चारिम युवक : (याद करैत जकाँ व्यंग्य सँ वाक्य दोहरबैत) एहि देशमे जतऽ एम० एस सी० लोकक ज्ञानक ई स्तर अछि जे ई युरेनियमक उपयोग नहि जनैत छथि, से बुझा सकैत छथि। रूस आ जापानमे छौड़ा - माँड़ पर्यन्त छोट-मोट आविष्कार कऽ लेत छैक।

पहिल युवक : अहाँ नहि पुछलियनि जे खुद अपने एखन धरि कए टा आविष्कार कऽ चुकलियैक ?

तेसर लोक : इएह् थिक शिक्षाक स्तर (क्षुब्ध होइत) कतेक अधःपतन भऽ गेलैक छात्र लोकनिक ? अरे एको टा पढ़ि-लिखि कऽ परीक्षा पास करै तखन ने। चोरि आ पैरवी !

चारिम युवक : (बेना सतर्क होइत) एँ यो, अहाँ कि ओही इन्टरव्यु बोर्ड सँ आबि रहल छी ? अहीं पुछने रही ई गप्प सब ? (ओ खूब उत्तेजित भऽ कऽ ओकरा दिस बढ़ैत छैक आ बाजऽ लगैत छैक) आ यदि अहाँक ओहि बदमाशीक बदला एहि चौबट्टी पर लेबऽ लागी ? पटकि कऽ करेजपर चढ़ि जाइ आ जोरसँ हुमचि दी तऽ कयो कानहु चला हएत एतऽ ? (जोरसँ) हमर ठीक सही उत्तर के गलती कियेक केलऽ तों ऽ ऽ ऽ ?

क्यो एक गोटय : किऐक तँ आइ काल्हि इन्टरव्यूमे सही उत्तर देब गलत बात छैक।

चारिम युवक : (बिना सुननहि ओकरा कहने जाइत) नरेटी धऽ कऽ मोकि दियऽ? यूरेनियमक उत्पादन भरि संसारमे सबसँ बेसी अमेरिका मे कऽयै? (**दर्शक के जेना चिन्तामे बुझबैत**) अपने विश्वास कऽ, हम सत्ते कहैत छी जे अमेरिका एहि विषयमे बड़ खतरनाक इरादा रखैए। (**दोसर लोक के पुछैत**) अहाँ किऐक कहलियैक हस! किऐक कहलहुँ हमर ठीक जबाब के?

दोसर लोक : (स्थिरे रहैत) आब लियऽ। औ बंधु हम कलऽ सँ एलौ इन्टरव्यू बोर्डमे? आ भला हम अहाँ सँ किऐक किछु पुछब? हम तँ मात्र एहि द्वारे कहलौं जे अहाँ अपना कें इन्टरव्यू बोर्डक विद्वान लोकनिक सोझाँ नहि, किछु पैघ दाँत आ नोंकगर नह वला जानवर सभक बीच घेरायल अनुभव कयने हुएब। ओतऽ ओ लोकनि अपन कुल गोत्रक उम्मेदवार के छोड़ि आन सभ पर सुकरातीक मुग्गर बुझि हुड़ा लेबऽ लगैत हेताह आ' बेज्जति कऽ कऽ पुरा दै मे लागल रहल हेताह। अपना लोक के छोड़ि कऽ सभ के....

पहिल युवक : हँ हँ! हल्ला छलैक जे ओहिमे चेयरमैनक अपने सारूक बेटा सेहो उम्मेदवार छलैन। तकरे होयबाक छलैक। तेँ बुढ़बा आन सब उम्मेदवार पर बताह बानर जकाँ खुखुआ-खुखुआ छूटै छलैए। सबकेँ गंजन गंजन-कऽकऽ धऽ देलकै।

दोसर लोक : तेँ सऽ कहय हमरा पर तमसयबाक प्रयोजन नहि यौ! ओही इन्टरव्यूसँ घुरनाहिरे कए टा भाय कए बेर ई सब कहलनि हमरा....। आहा! ओही आब पाँच वर्षसँ बेरोजगार अछि। आ एहि वर्ष छब्बीस जनवरी कऽ ओकर सरकारी नोकरीक वास्ते उमेर सेहो खतम छै। सरकारी नोकरीक रस्ता बन्द।

पहिल युवक : २६ जनवरीए कऽ उमर खतम! चलू बड़ दिव। मोक्ष तँ अवश्ये भेटतै आब। पुण्य तिथिमे मरला उपर मोक्ष धएले रहैत छैक। शास्त्र कहैए।

दोसर लोक : मृत्यु नहि यौ। सरकारी नोकरी पयबाक वयस खतम होयबाक तिथि। आ ताहू पर तोँ तँ जनिते छहक जे ऐन २६ जनवरी कऽ जन्म लेनिहार अपना देशक कोनो लोक के जखन सरकारे नोकरी नहि दऽ सकय तँ ई बड़का—बड़का विशाल लोहा फैक्ट्री वा कपड़ा-तेलक कारखाना वला सब किऐक देतैक?

(**उत्तेजित युवक जेना ढील पड़ि गेल। जेना अफसोच करऽ लागल। ओकर मुँह लटकि गेलैक फेर तत्क्षण ओ अचानक माथ उठौलक आ उपस्थित जन-साधारण के चेतबऽ लगलैक**)

चारिम युवक : ई यूरेनियम! देखबै एकर नर संहारी विध्वंसकारी कुल्प सब! करामाति!

पहिल लोक : की करामाति? (**चिन्तित स्वरमे**)

चारिम युवक : देखबैक ने। हम फेरो कहि दैत छी ई यूरेनियम बहुत खतरनाक विस्फोटकारी ऊर्जा थिक। एकर जे कतेक जोगाड़ कएल जा रहल छैक से सब टा भयानक युद्धक औजार आ शक्तिक वास्ते कएल जा रहल छैक।

दोसर युवक : मुदा ओ लोकनि तँ कहैत छथिन जे ई मानवीय विकास आ' समृद्धिक बाट बनयबाक एक टा महान ऊर्जा थिक जाहिसँ मनुष्यक प्रगतिक डेग आओर आगाँ बढ़ैवला छैक।

चारिम युवक : हँ हँ! कहबा-सुनबामे तँ ई एखन सैह। तेँ लगैत छैक पवित्र आ शुद्ध। मुदा ई केहन खतरनाक उद्देश्यक उपज थिक, तेकर करामाति तँ....

पहिल लोक : (चिन्ता आ उद्वेगसँ) रे भाय, कहबो त करब जे की करामाति?

दोसर लोक : की आरामाति ? अहाँ भाय साहेब कमाले छी। अरे ई युवक एखन उमेरक जोशमे छथि। अज्ञान छथि। नहि बुझैत छथिन जे अपना देशमे एकर एहन प्रयोग असंभव छैक।

चारिम युवक : (क्रोध सँ) किऐक ?

दोसर लोक : किऐक तँ अपन राष्ट्रीय नीतिक खिलाफ छैक ई बात। हमरा लोकनिक सिद्धान्त विश्व बंधुत्वक अछि जेकर रास्ता सत्य आ अहिंसाक छैक। अपनहि जनताक विरुद्ध कतहु होइक एकर प्रयोग ? अपना दुश्मनक खिलाफ तँ हमरा लोकनि कारवाइ करबे ने करैत छियैक, अहाँ लोकनिकेँ तँ बुझले अछि....आ अपने लोक पर कतहु....

चारिम युवक : (ओकरा तीक्ष्णता सँ देखैत) एकर रुखि हमरा सभ दिस नहि मोड़ल जयतैक ? भविष्यमे ? हमरे लोकनि एकर शिकार नहि बनायल जायब ?

दोसर लोक : कथमपि नहि। से कदापि नहि भऽ सकैए।

चारिम युवक : ठकाऽ पुनि। सएह हेतैक।

दोसर लोक : तोँ नहि बूझि रहल छहक युवक। ई जतबा कामी होइत छैक ओतबे उपयोगी सेहो। काल्हुक मनुक्ख, बिना एकरे सुरक्षित नहि रहि सकत।

पहिल लोक : कोना ?

दोसर लोक : एना, जे देखियौ, आइ अमेरिका लग ई सबसँ बेसी मात्रामे छैक। ओ अपन सामान सबसँ भंडार भरने जा रहल अछि। ओकर देशक सीमामे जनता पर कहियो कोनो विपत्ति नहि पड़तैक।

पहिल लोक : भाय साहेब ई कहू जे जखन ओ एहन जरूरी चीज छैक तँ अपना कतऽ किऐक नहि अछि ?

दोसर लोक : अछि कोना नहि ? किछु बजारमे भेटल-ए किछु दुनियाक बैंकसँ कर्जा रूपमे। मुदा देशक किछु थोन्हल मूड़ी बला चिन्तक लोकनि एकर उनटे अर्थ लगबैत छथि। आदतिये

छनि उन्टा सोचबाक, उनटा करबाक। एहि कर्जकेँ 'भीख' कहैत छथिन ! यद्यपि कि एहि कर्जक लेल देश बड़ पैघ मूल्य चुका रहल अछि। जे हो ! विरोधी मतकेँ सेहो अवसर देबाक आदर्श, अपना कतऽ बड़ प्राचीन अछि। तेँ विरोधी मतक सेहो स्वागत।

क्यो एक गोटय : अपने भाषण-प्रोजेक्टक डाइरेक्टर बुझाइत छी....

दोसर लोक : अहाँ लोकनि के बुझले हएत जे आब एक टा विशाल प्रोजेक्ट बनल अछि। ततेक पैघ ततेक पैघ जे ओकरा ओड़क सम्पूर्ण एशियामे...

पहिल लोक : त की सब बनतैक ओहि कारखानामे ?

चारिम युवक : बड़का-बड़का विस्फोटक औजार ! मनुक्खकेँ भूजि कऽ रखै बला बड़का-बड़का खापड़ि। इएह सब।

दोसर लोक : नहि यौ ! ऊर्जाक एहन विराट स्रोत केँ ई युवक विध्वंसकारी कारखाना कहि कऽ बुझा रहल छथि। ई अहाँ लोकनिकेँ भ्रममे राखि रहल छथि। झूठ कहैत छथि।

चारिम युवक : झूठ अहाँ बाजि रहल छी। हम लोककेँ ठीक-ठीक बुझा रहल छियैक। एखन देश केँ एकर पहिल जरूरति नहि छैक !

दोसर लोक : देश पर अनेक प्रकारक चौतरफा संकट....

चारिम युवक : इएह तँ थिक चलाकी ! एहि विस्फोटक योजनाक पक्षमे खुट्टे ई प्रचार आ' तर्क कएल जाइत अछि जे देश पर कोनो खतरा नहि आबय आ' यदि आबियो जाय तँ देशक, देशक महान जनताक रक्षा कएल जा सकय।

पहिल लोक : (किंचित डरायल) केहन खतरा ? कतऽ सँ के करतैक खतरा ?

दोसर लोक : आर के ? एहि दिससँ चीन, ओम्हरसँ नेपाल कऽ सकैए आ' ओहि कात सँ पाकिस्तान....

चारिम युवक : हैं हैं। चीन, नेपाल आ' पाकिस्तान ! हम पुछैत छी (तीनू दिस दर्शककेँ पुछैत) अहाँ लोकनिकेँ अछि खबरि ?

कथो एक गोटय : जखन कि सत्य बात तँ ई छिक जे एहि तीनू पड़ोसी देशसँ हमरा लोकनिक सम्बन्ध पारिवारिक बनि रहलए। अगिला किछुए दिनमे हमरा लोकनि एक दोसरा कतऽ वियाह दुरागमन आ' छठियार मूड़नमे चीन नेपाल, पाकिस्तान गेल आयल करब। तोहर गवैं जायब मिलि जुलिकऽ नेपाल चीन पाकिस्तानमे अपन तिहार चलत।

चारिम युवक : जखन कि अहाँ लोकनि के अछि पता जे कतेक रास चीन नेपाल आ पाकिस्तान अहाँक आस-पड़ोसमे नुकायल अछि अगले बगलेमे ?

कथो एक गोटय : हमरो लग ? हमरो पड़ोसमे यौ ? (चिंतित जकाँ)

चारिम युवक : (गंभीर चेतौनक स्वरमे) हँ ! हम फेर कहि दैत छी जे ई तमाम बम बन्दूक तैयार चाहे जाहि देशमे भऽ रहल हो दुनियामे चाहे कतहु भऽ रहल हो, अहूँक छाती आ' गर्दनि दिस चलि सकैय। किएक तँ जखनहि अहाँ हिनकर मन माफिक नहि रहलियनि कि हिनका नजरिमे अहूँ कखनो चीन आ' कखनो पाकिस्तान जकाँ भऽ जयबनि जे कि अहाँ अपना अधिकार लेल ठाड़ हएब। किएक तँ से हिनकर स्वार्थक विरुद्ध हेतनि-अधिकार लेल अहाँक उठिकऽ ठाड़ हएब।

दोसर लोक : केहन भड़काहु गप्प करै छऽ हौ भाय ? ई सभ टा सभ किछु अपना देशवासिंक वास्ते तँ छैक ! अपन देश धन्य अछि। संदेह जुनि करऽ ! संशय आत्माक नाश करैत छैक अहा हा ! अपन देश ! (ओ मुग्ध हँइस आँखि मुनैत बुनू हाथ जोड़ि कपार पर रखैत कहैत छैक) अपन देश ! हमरा लोकनि के एकर सभ टा गति विधि कें श्रद्धासँ देखबाक चाही ! संशयसँ नहि "संशयात्मा विनश्यति...

कथो एक गोटय : कोनो गति विधि पर संशय नहि करबाक चाही ! आ' भुखमरी आ' निहत्था-निरीह मनुक्ख सब पर होइत बंदूक आ' गोलाबारी के फूल बेलपात चढ़ा कऽ आरती करबाक चाही, यौ महानुभाव ?

दोसर लोक : (नहि सुनैत सन कमे) अपना नेतामे श्रद्धा आ' अटूट विश्वास राखी। आ' नितान्त निःस्वार्थ भावसँ आँखि मूनि कऽ समाज-सेवा करैत जीवन धन्य धन्य करैत रही ! ई नश्वर आ अकिंचन देह आ प्राण समाज-सेवा करैत देशक बलिवेदी पर अर्पित कऽ दी। ई ऊर्जा तँ सेहो, कल कारखाना सेहो तँ हमरे लोकनिक वास्ते छिक।

चारिम युवक : हँ, हँ किएक नहि ! एही कारखानासँ ने आर्थिक मोका-बिला कएल जयतैक।

पहिल लोक : कथीक मोकाबिला ?

चारिम युवक : (व्यंग्यसँ) आक्रमणकारी शत्रु सभसँ। जखन कि हमरा सभकेँ आइ धरि क्यो ई नहि कहलक जे आक्रमणकारी के होइत छैक ?

पहिल लोक : ई आक्रमणकारी के होइत छैक हौ भाय ? आ एहि बात सँ ओकर कोन सम्बन्ध छैक ?

चारिम युवक : कहलहुँ नहि, बाहरी दुश्मन जखन देशक सीमा पर हमला करत माने आक्रमण, तँ एहि कारखानाक बनल लड़ाइक औजार सबसँ लैस हमर सेना ओकरा खेहाड़ि कऽ सीमा सँ बाहर कऽ देतैक।

पहिल लोक : मुदा जेना कि अहाँ लोकनिक गप सपसँ मतलब बहराइत अछि "'यदि बाहरसँ ओ देश सब हमरा सब के घेर लिअय आ' एम्हर पाछाँसँ अपने देशक चीनी नेपाली पाकिस्तान गोलाबारी कऽ कऽ हमरा सब कें भूजि कऽ राखि दिअय तखन ? की करब ?

चारिम युवक : हँ भायजी, अहाँ बिल्कुल ठीक बूझि रहल छिऐक। एहनो भऽ सकैए ! बल्कि इएह हएत।

पहिल लोक : (चिंतित) तखन हमरा की करबाक चाही ?

दोसर लोक : धैर्य आ' शान्तिसँ काज लेबाक चाही, लड़ाई झगड़ा नहि करबाक चाही।

पहिल लोक : ककरा सँ ? लड़ाई-झगड़ा ककरासँ नहि करबाक चाही ?

दोसर लोक : (बुझबैक मुद्रामे) ऑफिसमे काज करैत होइ तँ अपना हाकिम सभसँ। गाममे रहैत होइ तँ मुखिया सरपंच आ बी० डी० ओ० सँ, अपना क्षेत्रक नेता अर्थात् एमेल्ले एम्पीसँ।

पहिल लोक : मुदा ई लोकनितँ हमरा सभक अपने लोक छथि। ई सब चीन, पाकिस्तान रूस वा अमेरिकाक लोक तऽ नहि छथि अपन समस्या वा तकलीफ कथा हमरा सब हिनका लोकनिकेँ नहि कहबनि तँ ककरा कहबैक ? ई तँ अप्पन लोक....

चारिम युवक : [तीक्ष्णतासँ] के कहि देलक अप्पन लोक ? ई सभ अनदेसी बाहरी लोक छथि। हिनकर मूल गोत्र, पूर्वजहुक—विदेश मे छनि। [सोचैत जकाँ] मुदा अहाँ अपन दुःख विपत्ति हिनका लोकनि के अवश्ये सुनबियनु। ई सुनितहि आयल छथि। सुनताह। फेर सुनताह। खाली सुनबियनु। लड़ू जुनि। हिनका लोकनिसँ लड़ाई नहि करू। हमरा लोकनिक [हाथ उठा कऽ जोड़ैत आँखि मुनैत] भाग्य विधाता छथि। हिनकासँ झगड़ा नहि करी ! [व्यंग्यसँ]।

पहिल लोक : वाह, लड़ी किएक नहि यौ ? जखन हमर सुख सुभीताक इन्तजाम करब हिनकर काज छियनि तँ ई छुच्छे दुःख सुनताह ? दुःख कि कोनो बाइ चीक मोजरा छैक आकि दरबारी दास नटुआक तिरहुत, जे सुनथि आ पान मखोड़ैत सुनि-सुनि कऽ झूमथि।

चारिम युवक : सेह बूझि लियऽ। हिनका लोकनि के पब्लिकक दुःख सुनि-सुनि कऽ आकुल-व्याकुल होयबाक आदति छनि। आश्वासन बाँटबाक आ, उन्मत्त भऽ जयबाक आदति....

दोसर लोक : नै-नै ! हिनका सबसँ लड़ला झगड़लासँ की फायदा ?

पहिल लोक : मुदा विचित्र सुझाव अछि अहाँक यौ साहेब ! ई लोकनि हमरा सभके भरि जन्म फाँकी दैत रहथि, झांसा-पट्टी पढ़बैत रहथि आ हम इहो नहि जबाब तलब करियनि जे ओ लोकनि एना किएक करैत छथि ? हम हुनकर कुर्ताक कॉलरो पकड़ि कऽ नहि पुछियनि जे ओ किएक एना...

दोसर लोक : बिल्कुल नहि। ई लोकनि अहींक हितक वास्ते सोचैत रहैत छथि। बड़ व्यस्त रहैत छथि। हिनका सभक कार्य बुद्धिजीवी बला कार्य छनि ने। ई लोकनि हरदम अहीँ लोकनिक समस्याक वास्ते चिंतित रहैत छथि।

पहिल युवक : हमरा समस्याक लेल ? सेह्हो ई लोकनि ? चिन्तित रहैत छथि ? (व्यंग्यसँ)

दोसर लोक : तखन आर की ? हिनका देशक कतेक काज रहैत छनि। उपरसँ अहाँक गाम, समाज जिला आ प्रान्तक उत्थानक वास्ते प्रगतिशील देश उठयबाक वास्ते सोचिते रहऽ पड़ैत छनि। बड्ड कार्य छनि। हिनका सबके यदि अहाँ अपने व्यक्तिगते समस्या सभमे ओझरबैत रहबनि, अपने 'बदली' आ 'पोस्टिंग' करयबामे खानगीए कार्य करयबामे ओझरौने रहैत जयबनि तँ ई लोकनि देशक काज कखन करैत जयताह ?

पहिल लोक : वाह भाय साहेब ! देशक काज ? आ' हम की देशसँ बाहर छी ? हमर व्यक्तिगत काज भऽ जयबा मे देशक काजके कोन बाधा वा हानि भऽ जाइत छैक यौ ? हमर, हमर धिया-पुताक सौंसे जीवन कनैत बीति जाय, आ' ई महानुभाव लोकनि देशक (व्यंग्यसँ) वास्ते काज करैत रहताह।

दोसर लोक : अहाँके विश्वास किएक नहि होइए जे ई लोकनि अहींक देशक काज....

पहिल लोक : जानि नहि कोन छनि केहन छनि हिनकर सभक देश

जकरा वास्ते ई सभ वेशीकाल विदेशेमे घौखड़ी जमौने रहैत छथि। आ दसादिन अखबार सभमे अपन मुखड़ा आ वक्तव्य छपबैत रहैत छथि।

दोसर लोक : श् श् ! एहन बात अहाँ किऐक सोचैत छी ? एहन प्रतिक्रियावादी बात। किऐक सोचैत छी ? क्रोधमे आन्हर नहि बनि जाउ। क्रोधमे उनटा बात नहि सोचू।

पहिल लोक : किऐक नहि सोची यौ ? भला कहू ! की तमाशा ! ई उनटा बात छैक ? कारखाना बनत बेगूसरायमे आ तकर नक्शा बनबाबऽ हमरा सभक लोक जापानमे बैसल छथि दू वर्षसँ। बेश मटकी ?

दोसर लोक : एहिमे हर्जा की ? अहाँ कतऽ तकनीकी ज्ञान ओतेक नहि बढ़ल अछि। आ' ज्ञान तँ अपनासँ छोटकोसँ लेबाक चाही। ज्ञान जतए भेटय ओतहि दौड़ि जयबाक चाही।

पहिल लोक : छोड़ू छोड़ू उपदेश छाँटब। ज्ञान छोटको सँ लेबाक चाही। हम अहाँ सँ पुछैत छी बल्कि अहाँ सभ गोटय सँ पुछैत छी (दर्शको के देखैत) जे अपना कतऽ तकनीकी ज्ञान किएक नहि भऽ सकल ओतेक ? एतेक वर्षक बादो एतबो टा तकनीकी ज्ञान हमरा सभके नहि आयल एकरा वास्ते हमर बाप दोषी छथि ?

पहिल युवक : अहा हा, भाय साहेब, अपना बाप के अनेरे किऐक अनैत छियनि एहिमे ?

पहिल लोक : नै-नै ! अहीं कहू जे हमर वा हमरा लोकनिमे किनकर बाप दोषी छथि एहि बातक लेल ? अपना कतऽ तकनीकी ज्ञान नहि बढ़ि सकलैक तँ ?

दोसर लोक : शान्त शान्त ! धैर्यसँ काज लै जाउ बंधुवर। अहाँक ई अभियोग ठीक भऽ सकैत अछि, मुदा हमरा सभ के इहो तँ सोचबाक चाही जे देश एखन संक्रान्ति कालमे बीति रहल अछि।

पयो एक गोटय : तीन चारि दस वर्षा तँ भऽ चुकल। आब कहिया धरि ई संक्रान्ति काल रहय बला अछि यौ साहेब ? हमरो परपोताक जन्म धरि की ? हमरे वयस एकैस वर्ष भऽ गेल आब। ई संक्रान्ति काल आखिर कहिया धरि गाड़ी घीचत ?

दोसर लोक : हँ, हँ संक्रान्तिकालसँ देश एखन गुजरि रहल-ए।

पयो एक गोटय : हः जेना दानापुर पसिंजर रेलगाड़ी काश्मीरक बड़का पहाड़ी गुफासँ गुजरि रहल-ए।

दोसर लोक : अरे नैं भाय ! संक्रान्तिकालसँ ! (जेना उपेक्षा करैत) ऐहन कठिन समयमे (सुझाव दैत) अपन विश्वास नहि गमयबाक चाही। यदि हमरा लोकनि देश हितमे धैर्य नहि राखब, त्याग नहि करब' तँ देशक वास्ते के करत ? अहाँ अमेरिकेक उदाहरण लियऽ ओतक' व्यक्ति-व्यक्तिक त्यागे सँ ओ देश आइ विश्वक सभसँ पैघ शक्ति अछि। हमरो सब यदि संतोष' धैर्य आ त्यागसँ काज नहि करी तँ ककर देश बर्बाद होएत ?

पहिल युवक : छन्नामल अरबीक। देश ओकरे छियै। सभटा सिपाहियो पुलिस ओकरे। राइफलक दोकानो ओकरे। आ, ई सभ गोटय जे हमरा धैर्य राखऽ कहि कऽ त्यागी बना रहल छथि—ओहो सब गोटय ओकरे छथिन। हमर क्यो ने अछि। हमर तँ बस ई संक्रान्ति काल थिक जे सार बत्तीस वर्षसँ चलि रहल अछि। चौरासी वर्ष धरि चलत। तकर तँ इएह अछि महान् संक्रान्तिकाल ! हमरा सभ तँ अशोकक फेकल कोहा-चैल थिकहुँ आ खापड़ि, बाटक कात आ' खत्तामे...पड़ल छी....।

दोसर लोक : आह, से नहि बाजी भाय। सभटा ठीक-ठाक भऽ जयतैक। चिन्ता नहि। सब हेतैक। अपनहि देशक पावन भूमि पर सभ किछु हेतैक देखियौ ने !

पयो एक गोटय : हँ, हँ, गोहत्या बन्द करबा लेल सेल्स टैक्स लगाओल जयतैक।

दोसर लोक : ओह साम्प्रदायिक चर्चा जुनि उठाउ ! जहिना कि देश पयर आगाँ बढ़बऽ लगैए कि....

क्यो एक गोटय : कि पाकिस्तान धमकी देब' लगैये, बाढ़ि आबि जाइए कि आन्ध्र प्रदेशमे अन्हर बिहाड़ि उठि जाइए।

दोसर लोक : हँ कोनो ने कोनो संकट विपत्ति हमरा लोकनिक बढ़ैत पैर छानि लैए तकर परिणाम जे प्रगति थम्हि जाइत अछि सबटा !

क्यो एक गोटय : के छानि लैये पैर के ?

दोसर लोक : आकस्मिक विपत्ति। हमरा सभक बढ़ैत चरण अचानक ठप्प भऽ जाइ-ए। अन्यथा आइ अपन देश सभ तरहें स्वतंत्र आ, आत्मनिर्भर अछि। निठाह कऽ आत्म निर्भर-अन्नसँ औषधि धरि मे।

क्यो एक गोटय : अजुके एखबार पढ़लियैक अछि, आत्म निर्भर जी, नकली दवाइ खयला पर कतेक स्वर्गारोहण भेलैक अछि।

दोसर लोक : छोड़ू ! एतेक एतेक लोक भऽ गेला पर एक आध टा घटना सभ विकसित प्रतिष्ठित देशमे भऽ जाइत छैक। भरि दुनियामे अहाँक देशक मान-प्रतिष्ठा कतबा-कतबा बढ़ल कतेक लाख बढ़लए से किछु अछि जानकारी ? (गर्वसँ) आइ विश्व बाजारमे अहाँक देशक नम्बर एकावन पर पहुँचि गेल अछि। ई परम गौरवक विषय ! (आत्ममुग्ध होइत)

क्यो एक गोटय : मुदा विश्व बाजारमे कतेक देश होइत छैक भाय साहेब ? निरीह-निरक्षर जनता के कनी इहो बुझा देल जाइक तँ बड़ कृपा अपनेक !

क्यो दोसर : हएह, एकावन तँ अवश्ये टा हेतैक (हास्य करैत)

चारिम लोक : बात के, तथ्य के गंभीरतासँ बुझबाक चाही। तखनहि देश आगाँ बढ़ैत छैक। दोसरा-दोसरा देशक बासी नागरिकमे छैक ई भावना, ई नैतिकता आ, चरित्र (खेद अनुभव करैत) अपना कतऽ एकर बिल्कुल्ले अभाव छैक।

पहिल युवक : ज्ञानक ने ?

दोसर युवक : भोजनक ने ?

तेसर युवक : स्वास्थ्यक ने ?

चारिम युवक : रहबाक बासी घरक ने ?

दोसर लोक : (चिन्तित आ खौंझायल सन) नै भाय ! चरित्र आ, नैतिकताक अभाव। आ, जाहि देशक जनतामे इएह नहि हो ओतक की उत्थान हेतैक ? की विकास हेतैक ?

पहिल युवक : (प्रस्ताव करबाक मुद्रामे) तँ एकटा किथेक नहि करी हमरा लोकनि ?

दोसर लोक : (उत्साहित होइत) बाजू ! बाजू !

पहिल युवक : किथेक ने हमरा लोकनि अमरीकासँ कीनि आनी चरित्र आर नैतिकता ? कीनलाहा गहूमे जकाँ इहो हुनू चलि आओत। जहाज खर्च नहि लागत, समय सेहो बाँचत। आ जखन ओ गहूम उधारी दऽ सकैत अछि तँ इहो सब उधारी दऽ सकैये। तत्काल पारित करेबामे बाँचत आ सबसँ विशेष बात जे एहि मे टेन्डर-तेन्डरक सेहो कोनो चक्कर झमेला नहि। आकि छैक ? (पुछैत मुद्रामे)

दोसर लोक : (कोधसँ देखैत) अहाँ लोकनि बड़ उग्रपंथी लागि रहल छी यौ ? (पुनः शान्त होइत) ओहुना, हमरा सब एखन गहूम वा नैतिकता नहि, एकरा हुनू सँ मूल्यवान वस्तु यूरेनियम मंगाइ-ए रहल छी। (कनोक चुप होइत सबके एक नजरि तौलैत) ओना अपना देशक एक टा जे सबसँ भयावह दुर्भाग्य अछि... ....

पहिल युवक : नेतागिरी !

दोसर लोक : इएह, इएह उग्रपंथी व्यवहार-विचार। अहाँ लोकनि सतो बड़ उग्रपंथी बुझाइत छी यौ ?

दोसर युवक : अहाँ अपना विषयमे की विचार रखैत छी श्रीमान् ?

तेसर युवक : कोनो खुरसट नेताक पकिया मुदा स्थानीय एजेन्ट (ओकरा देखैत) की विचार ? (दोसर लोक खौंझायल अस्त व्यस्त)

दोसर लोक : शिव शिव एना नहि बजबाक चाही अहाँकेँ। मिथिलाक अपन महान संस्कृति आ शिष्टाचार छैक। अहाँ लोकनि

हैंडिल नवतुरिया बिकहु एना अलगटेंट जकां नहि करी। एहि सँ मिथिला आ मैथिलक, अप्रतिष्ठा हएत। एखनो फेर मिथिले ! हम अपन लोक बिकहु अहाँ लोकनिक (विनम्रतासँ)।

तेसर युवक : अहा हा ! जतेक जाकड़ माल, घुसट नेताक पाकल परोड़क नाड़रि सब छथि, सेहो तँ हमरे लोकनिक आदमी छथि ने....

दोसर लोक : नैं, से बात नैं छैक। हमरा पर विश्वास करू। भरोस राखू।

दोसर युवक : भरोस ? से तऽ आछबे। आर अछि की अपनेक लग ? आब देखियौ ने कखन सँ ने एक प्याली चाह पीबाक तृष्णा भऽ रहलए। बीस पाइमे भेटैत छैक। मुदा कतसँ पीबू ? जेबीमे पाइ रहत तखन ने। तथापि भरोसमे, विश्वास रखबामे कोनो कमी नहि अछि महराज। भरोस नहि हो तँ मनुक्ख ....चाह पर अपने सन, अपने सन एजेन्ट भेटि जाथि 'बोल भरोस छाप' एजेन्ट तखन तँ फेर....

दोसर लोक : (किचकिचा कऽ) अहाँ ठीके उग्रपंथी छी। अहाँक बजनाइए सँ बुझा रहल-ए जेना कोनो आतंकवादी संगठनक लगैत छी। (तावत दर्शक सभमे जेना कनफुसकी होअ लगैत छैक आ, हल्लुक फल्लुक पड्यंत्रक उपक्रम दृश्य। लोक एक दोसराके पुछऽ लगैत छैक कत छै भाय उग्रपंथी। कहाँ छैक आतंकवादी संगठन ? के पकड़लकै ओकरा सबकें। तखने पहिल लोक दोसर लोक के सम्बोधित कऽ कहऽ लगैत छैक)

पहिल लोक : हमहु गौर कऽ रहल रही जे आखिर अहाँ वस्तु की छी ? मुदा आब जा कऽ पता चलल जे अहाँ कोनो घूसटगर नेताक अवश्ये किछु छिऐक। सार-तार किछु। (ओकरा पीठ पर पोल्हबैत जकाँ सिनेहसँ पुछैत छैक) ककर छियैन अहाँ ?

दोसर लोक : विचित्र बात थी। हम किये होअऽ गेलियनि किनको किछु ? हम तँ तमाशा देखऽ आयल रही। हम''''हम किएक होअऽ जयबै ककरो किछु ?

पहिल लोक : नः। हमरा तँ पक्का बुझाइत अछि जे अहाँ कोनो राजनैतिक दलाली करऽ आयल छी एतऽ। सोचने हएब जे किछु जनता प्रकारक लोक जमा छै एतऽ। कनीक दिमाग सेहो हेतैक। चली, कनी बिया एतहु छीटैत चली। ओही अनाजक बीज जे अंकुराइ, जन्मै पकर फसिल सेहो लहलहा उठै, खाली ओहिमे अनाजक दाना नहि लगैक''''''आ, तैयो लोक ओहि फसिलक आशा बाटी मौसमक मौसम तकिते रहि जाय। एहि बाँझ फसिलक रखबारीमे सभ दिन लगले रहय। एहि बाँझ फसिलक जाहिमे कहियो कोनो शीश की दाने ने लगैक ! सैह ने ? महाराज ?

दोसर लोक : अहाँ की, राजनैतिक कन्ट्रोवर्सी ठाढ़ करबाक इच्छी छी की ?

पहिल लोक : विलक्षण बात ! अलबत! राजनैतिक विवाद ! एँ ? बड़ दिव्य।

दोसर लोक : हमरा तँ बुझाइत अछि। किपेक तँ जनता जाहि बातके बुझि रहल छैक ताहिसँ ओकरा अहाँ भटका रहल छियैँ। एही बात सँ तँ अहाँक कतेक पता चलैए। (चेतबैत स्वरमे) ई बड़ अधलाह बात ! बड़ खराब। ई एक प्रकारक देश-द्रोह थिक। समाजक संङ्ग विश्वासघात।

पत्नी एक मोटय : देशद्रोह ? विश्वासघात ? तखन तँ ....

दोसर लोक : अहाँके अछि बुझल कि नहि जे एहि अपराधक वास्ते अहाँपर कानूनी कारवाई कएल जा सकैए। एहन गम्भीर सामाजिक आचरण करबाक चलते कानून द्वारा अहाँकि हथकड़ी धरा कऽ जहलमे बन्द कऽ देल जा सकैए।

पहिल लोक : सैह तऽ कहैत छैक। एँ भी दलाली करी अहाँ आ' जेहल मे ठूसल जाय ई लोक ? मियाँ मंसूर। धिक्कार अछि !

दोसर लोक : (एकाएक विनम्र होइत) अपने कोन पार्टीसँ एफिलिएटेड छी ? आइ दि वे....कांग्रेस ई‌‌ंका, जनसंघ मतलब जनता समाजवादी-साम्यवादी आ कि स्वतन्त्र....ककरासँ ?

पहिल लोक : हमर अपन पार्टी अछि-फराक। एहि बैनरपर हमरा लोकनि कोनो चुनाव नहि लड़लौंहें। (थेबा धमकी दैत) मुदा ई जुनि बूझी ! वर्तमानमे हमर कार्डर अछि एकावन देशक !

दोसर लोक : की ऽऽऽ। (धबड़ायल सन)

पहिल लोक : जी ऽऽऽ। घबड़ा गेलौं। लागल दौरी ?

(पार्टी सँ हल्ला गुल्ला आ एकटा प्रमुख स्वरपूछि रहल छैक जे भाय एतऽ की भऽ रहल छैक ? कोनो राजनीतिक पार्टीक कार्यक्रम भऽ रहल छैक की ?)

दोसर लोक : (अचानक भंगिमा बदलैत) हँ, एतऽ एखन राजनैतिक पार्टीक एक टा देश व्यापी महत्वक कार्यक्रम भऽ रहल छैक। (तकर बाद ओ ओहि माइक्रोफोन लग जाय चाहैत अछि जे माइक सत्यक सेहो भऽ सकैत छैक आ, काल्पनिको ! तावतहि साँवरिया धोती, कुरता आ एहि बेर रुद्राक्षक मोटका माला माथ पर टोपी पहिरने लोकक सोझाँ आबि जाइत छैक आ' दोसर लोक विरोध करैत छैक)

साँवरिया : नै-नै। झूठ बात। पार्टी-कार्यक्रम नहि छैक। एतऽ हमरा सब प्रार्थना सभ करबा लेल जूमल छी। अपन महान रोगी नेताक स्वास्थ्य लाभक लेल सामूहिक रूप सँ नागरिक प्रार्थनाक लेल उपस्थित छी। अपन प्रानप्रिय वृद्ध नेताके दीर्घायु दिअयबाक लेल ! (ओ चेहरा पर भक्तिक विह्वलता अनैए। दोसर लोक आ साँवरिया एहि घोषणा सँ पहिल लोक अस्त व्यस्त आ चिंतित भ' जाइत अछि आ ओकरा सभक बात के काटबाक कोशिश कर' लगैए)

पहिल लोक : नई भाय लोकनि। से नहि। ई लोकनि झूठ बाजि रहल छथि। अहाँ लोकनि भ्रममे जुनि पड़ू। एतऽ तँ हमरा

लोकनि किछु नवतुरिया, नाटक खेलयबा लेल जूमल छी। शहरक एहि सबजनिया स्थान के हमरा लोकनि एकटा नाटक खेलयबा लेल चुनलौंहें। देखैत छिऐ चारू कात सँ अबैत जाइत जन-जीवनक बीच एहि खूजल लोक-प्रवाह मे हमरा लोकनि एकटा सामाजिक नाटक खेलाय चाहैत छी, जकरा अबैत-जाइत सर्वसाधारण लोक सेहो देखि सकय। ई नहि जे भव्य हॉलक समृद्ध मंच अकर खाली बाबुए-भैया-हाकिमे-मंत्री। लोको देखि सकय।

दोसर लोक : (अधीर होइत) नै नै ! अहाँक कहलासँ हएत ? एहि पब्लिक प्लेस के हम पार्टी कार्यक्रमक वास्ते चुनलौंहि आ' सएह हेतैक एतऽ।

साँवरिया : से नहि हएत। एतऽ एखन सामूहिक नागरिक प्रार्थना हेतैक। पहिने प्राण-रक्षा ! एतेँ गोट महान नेताक प्राण-रक्षा।

दोसर लोक : ई ढोंगी- पाखण्डी ! भऽ लियऽऽ

पहिल लोक : ईह, पार्टी-भाषण आ' प्रार्थना सभा ! ककर दिन छैक जे नाटक छोड़ि कऽ आन किछु करत एतऽ....

साँवरिया : (खूब जोरसँ) हँ यौ, हँ-ए हम ! हम तँ करब प्रार्थना-सभा देखबै एकरे जरूरति छैक एखन। एतेक लोक जमा भेल अछि एतऽ। एतऽ हमरा सब अपन मरणापन्न महान नेताक वास्ते स्वास्थ्य लाभक प्रार्थना करब। आइ राति पौने नौ बजेक बुलेटिनमे ई समाचार आयब अत्यन्त आवश्यक छैक, जे हमरे अपन एहन महान नेताक और्दा बढ़याक लेल सामूहिक प्रार्थनाक सभा आयोजित कयलौं। भरि शहर।

पहिल लोक : (क्रोध आ' विवशतासँ, विचित्र बात। ई स्थान चुनलौंहि हमरा लोकनि नाटक वास्ते। आ' ई अहाँ लोकनि की बक-बक कऽ रहल छी यौ ? कहू तँ, हमर सभ टा पात्र लोक एतऽ आबि चुकल छथि।

दोसर लोक : तँ पएर धोआ कऽ बैसबियनु एखन !

पहिल लोक : वाह वाह। हमरा लोकनि पैदल, साइकिल पर जेना-तेना घूमि घूमि कऽ सभ ठाम कागज पर, कूट पर लिखि-लिखि

कऽ टंगने छिऐक जे भाइ एहि चौकी पर नाटक हएत आ' ई कोन तमाशा कऽ रहल छी अहाँ लोकनि (बुनूके देखैत जेना बुझयबाक चेष्टा करैत) अहाँ लोकनि खाम खाह हमर निर्धारित कार्यक्रममे विघ्न उपस्थित कऽ रहल छी? अपन टाँग अड़ा रहल छी—नाक घुसा रहल छी। चलू, हटू एतऽसँ। दियऽ जगह। (ओकरा माइक्रोफोन लगसँ हटयबाक प्रयास करै छैक)

साँवरिया : (जेना बाँहि मड़ैत) नाक हम घुसा रहल छी कि तोरा लोकनि? (ओ झगड़ा करबा लेल प्रस्तुत छैक)

पहिल लोक : मतलब? ई एतेक रास दर्शक सब अखनसँ ठाढ़ छथि नाटक देखबा लेल। आ' अहाँ लोकनि मिलिकऽ ई कोन उपद्रव ठाढ़ कऽ रहल छी? दर्शक बुझयबाक आ ई मंचक व्यवस्था हमरा लोकनि कयलौंहि नाटक करबा लेल आ कहयी छैक जे 'कएल धएल पर श्री जगरनाथ' करऽ अयलौंहें अहाँ लोकनि। हमर मंचे हथिया रहल छी। अलबत्त चलाकी। चलू हटू, हमरा शुरू करऽ दियऽ नाटक। बड़ समय भऽ गेलैक हटू एतऽसँ।

दोसर लोक : मज्जाक थिक! ई पब्लिक प्लेस छियै। कोनो व्यक्तिगत लाभक वास्ते एकर दुरुपयोग होबऽ देल जायत? सेहो एतेक रास जागरूक जनताक आँखिक सोझाँ? एकर दुरुपयोग भऽ जयतैक?

पहिल लोक : नाटक कि कोनो राजनीति छैक जे दुरुपयोग....

दोसर लोक : चुप्प रहू। एहि नाटक-फाटक सँ की भेनिहार? मरऽ जाइ तँ रासि गाबी? देशक जनताकें एखन राजनैतिक चेतनाक जरूरत छैक। नाटक आ प्रार्थनाक नहि! सौंसे देशमे अकाल पड़ल अछि। आ एतऽ मनोरंजन चलत! (लोककें सम्बोधित करैत) तेँ इएह सोचि क' जनसाधारण लोकमे समझदारी आ' चेतना बँटबाक उद्देश्यसँ हम एत' साप्ताहिक भाषणक कार्यक्रम चालू क' रहल छी। (गला साफ करैत बजबाक उपक्रम)

हँ तँ, भाइ बन्धु आ' बहीनि लोकनि....

क्यो एक श्रोता : बहिन कहाँ छथि एतऽ एकहु टा। सबटा भाइए सब ...।
(तावत बीचहिमे साँवरिया बाजऽ लगैत छैक)

साँवरिया : भाइ-बहिन लोकनि! ई घोर विडंबने थिक जे एखन एहि क्षणमे हमरा सभक एक मात्र जन-नेता, एहन महान नेता अस्पताल मे पड़ल-पड़ल अन्तिम साँस गनि रहल छथि, जे घड़ी ने नाड़ी खींचि लेनि ...तौंसे देश आओर परिसंसारक लोकक आँखि आ मन एही नेता लेल टाँगल छैक आ, ई महाशय राजनैतिक जागरण कऽ रहल छथि (घृणासँ) धिक्कार थिक। गद्दार लोक सब नहि तन। धिक्कार।

क्यो एक श्रोता : त. वास्तवमे कहू तँ भला! कृत्रिम सहानुभूतिसँ)

साँवरिया : एखन हमरा लोकनिक महान नेताक जीवन-रक्षाक प्रश्न उपस्थित अछि, जरूरी अछि एहि वास्ते जे बेशीसँ बेशी संस्था सभ सामूहिक प्रार्थना करय, अधिक सँ अधिक संख्यामे अष्टजाम हवनादि, पूजा-पाठक आवश्यकता छैक, कि एहि भाषणबाजीक? किदन कहैत छैक जे भोज ने भात हड़हड़ गीत

क्यो एक श्रोता : तः सत्ये! अहा! महान नेताजी! अहाँ हिनक उमेर खूब बढ़ा दियनु हे छठि परमेश्वरी!

साँवरिया : (सहयोग पबैत जकाँ) एहने लोक सब। इएह वेमौसिम मलार गौनिहार सब संपूर्ण देशक भविष्य चौपट्ट कऽ देलक अछि। (क्षणेक चुप रहैत) राजनैतिक चेतना....

दोसर लोक : नै नै, अहाँक प्रार्थना! (व्यंग्यसँ)

साँवरिया : तखन की? आ, सेहो लोक रहय अहाँक तँ एकटा बात। सोझाँक सभ लोक कि तोरा पार्टीक छऽ। चीन्हैत छहक? (सभके देखैत मुग्ध होइत जकाँ) देख लहक सभक मुखाकृति पर पसरल प्रार्थना-पूर्वक पवित्र आभा। एही देखि कऽ तोरा नहि बुझा रहल छऽ जे ई लोकनि प्रार्थना करबाक नैष्ठिक

मूडमे छथि ! ई लोकनि प्रार्थना सभा करब आयल छथि ! ई प्रार्थना सभाक लोक छथि !

पहिल लोक : अजब ताल अछि। ई दर्शक लोकनि तँ नाटक देखबा लेल आयल छथि। हिनका सबके हमरा लोकनि नाटक देखबा ले, स्थान-स्थान पर सूचना गोतने छियनि, तेँ आयल छथि। ई लोकनि दर्शक छथि। हमरा सभक सामाजिक नाटक देखऽ आयल छथि। आब हटू-हटू अहँ लोकनि। **(ओ माइक्रोफोन लगसँ हटबऽ चाहैत छैक)** छोड़ू, छोड़ हमर माइक।

साँवरिया : आब एकर सदुपयोग प्रार्थना सभामे हेतैक तखन किछु...

पहिल लोक : दियऽ, छोड़ू हमर माइक। जेबी खर्ची काटि-काटि कऽ एकर इन्तिजाम करी हमरा सब आ, एकरा हथिया कऽ 'सदुपयोग' करताह ई ? से की, तँ प्रार्थना.......अलबत्ते बात ! माइक हमरा लोकनिक........

साँवरिया : चलऽ चलऽ ! हिनकर माइक ! ई तँ नेहरू युवा केन्द्रक माइक्रोफोन छैक। शुद्ध सरकारी छैक। एकरा वास्ते किराया कियेक देबऽ पड़ल हेतः ? झाँसा-पट्टी दैत छहक पब्लिक के ?

पहिल लोक : नें-नें। गुरु सप्पत ! माँगऽ गेल रहिऐक नेहरू युवा केन्द्रसँ। मुदा ओकरलाउड स्पीकर चल गेल छैक ओकर हाकिमक बेटीक बियाहमे बरियाती पार्टीक वास्ते। नहि, यदि खाली रहितैक तँ बेचारे अवश्ये दा दऽ दितथि, बड़ दिव स्वभाव छनि बेचारेक। **(एक क्षण रुकि कऽ जेना सचेत होइत)** मुदा एखन........हमरा सब के एकर भाड़ा देबऽ पड़त। ई भाड़ाक चिक कंपनी वाला बड़ कृपा कऽ कऽ मात्र दू घंटाक वास्ते उधारी देलक-ए।

बचो एक गोटय : (उबियाइलि स्वरें) आब दियौक। हिसाब फुनि दिय। आरम्भ करू नाटक।

पहिल लोक : हँ हँ, हटू-हटू। बड़ देरी भेलैक। सभटा दर्शक उबिया कऽ बिना देखनहि पड़ाय लागत। सभटा अभिनेता सबे दिक-दिक भऽ रहल छथि।

बचो एक गोटय : की दिक-दिक एहिमे ?

पहिल लोक : वाह रे वाह, जनताक मनोरंजन वास्ते हमरा लोकनि एतेक मेहनति कयलहुँ। जनता आयल अछि नाटक देखऽ आ, ई लोकनि एक गोटय राजनैतिक भाषण आ, दोसर गोटय प्रार्थना सुनबऽ चाहैत छथि जनता के। हद भऽ गेल। **(किछु जोरेसँ)** हटै जाउ। हटू। कृपया हटि जाउ........ **(स्वयं मुदा प्रार्थनाक स्वरे ओ माइक पर बजबाक उपक्रम करैत अछि मुदा स्वर काँपि रहल छैक घबराहटिमे)** हँ, तँ भाय लोकनि। हमरा सभ नाटक आरंभे कऽ रहल छी। दर्शक गण कृपया क्षमा करू। अपने तँ सभ किछु देखिये रहल छी तखनसँ। माफ करी। देखलियै, नहि की-की विघ्न उपस्थित करैत गेलाह-ए ई लोकनि ? खैर आब हमर सामाजिक नाटक शुरू होइत अछि। एकर नाम अछि.......

(तावतहि माइक लुझबाक दृश्य उपस्थित भऽ जाइत अछि। क्रमशः पहिल लोक, दोसर लोक तथा साँवरिया, एहि तीनू गोटेक बीच माइक छीनबाक झंझटि आरंभ भऽ जाइत छैक। सँगहि तीनू गोटय अपन-अपन बातो बजैत अछि)

''पहिने हम राजनीति करब
''पहिने हम प्रार्थना-सभा करब।
''पहिने हम नाटक करब......

अकस्मात्‌मा व्यक्ति : देखू, अहाँ लोकनि झगड़ा जुनि करैत जाउ। ई पब्लिक प्लेस थिक, सबजनियाँ स्थान। एहऽ एना झगड़ा नहि करी। अहाँ लोकनिक एहन करतबसँ नगर सभ्यता पर बड़ खराब प्रभाव पड़ैत छैक। अहाँ जनैत छियैक ? अहाँके अछि बूझल जे एक शहरमे कतेक जाति, धर्म, भाषा आ सम्प्रदायक लोक रहैत अछि आ कतेक पेशाक लोक रहैत

छैक ? (पृष्ठभूमिमे 'हम पंछी एक डाल के' गीत बजैत रहैत रहय तँ उत्तम।) हिनका लोकनि पर खराब प्रभाव पड़ैत छनि।

बचो एक गोटय : (बगलमे ठाढ़ युवकसँ हिनका दिस इशारा करैत पूछैत छैक) "अपने के थिकहुँ ? की थिकहुँ ? आ कथी लेल प्रसिद्ध थिकहुँ ?

अफसरनुमा व्यक्ति : अहाँ लोकनि के भरिसक ज्ञात नहि अछि (सबके तोलैत जकाँ नजरिसँ देखैत) जे दएह एहने छोट-छिन लगनिहार आपसी झगड़ा सेहो साम्प्रदायिक दंगा बनि जाइत छैक।

(ओम्हर तीनू व्यक्तिक मूक झगड़ा चलिये रहल छैक। आँखि-हाथ-मुँह आदि मुद्रासँ देखल जाइत छैक)

आहा हा। शान्त अहाँ लोकनि शान्त रहू जाउ। पब्लिक प्लेसमे झगड़ा-झंझटि नहि करैत जाउ। अपन स्वतंत्रताक एहन दुरुपयोग नहि करैत जाइ जाउ। अपना-अपना अधिकारक दुरुपयोग नहि....

बचो एक गोटय : (शान्त करैत) शान्त भऽ कऽ सुनैत जाइ जाउ यौ। ई की अंट-संट कएने छी ? एतेक गंभीर बात ई साहेब कहि रहल छथि .. आ, अहाँ लोकनि....

अफसरनुमा व्यक्ति : (युवक के प्रशंसासँ देखैत) हँ शान्त रहू। एहि प्रकारक एहन आचार-विचारसँ हमरा लोकनि के लोक सभ असभ्यो बूझि सकै-ए (हाथ जोड़ि कऽ) हम करजोड़ैत छी, हमर निवेदन जे अहाँ लोकनि शान्ति आ' व्यवस्था बना कऽ राखू। आ' शान्तिपूर्वक अपन-अपन प्रोग्राम सफल करू। हम अहाँके सहयोग करबा लेल प्रस्तुत छी। हम अपन सेवा अर्पित करबा लेल आयल छी, बूझू जे अस्सी कोस बनारस सँ ?

बचो एक गोटय : ई सज्जन के थिकाह ? सज्जनताक साक्षात प्रतिमूर्ति ?

बचो दोसर गोटय : मुंगेरक रिटायर्ड डी० एम० थिकाह। तीन मास पूर्व रिटायर भेलाह अछि। आइ-काल्हि समाज-सेवामे अपन जीवन अर्पित कएने फिरि रहल छथि।

अफसरनुमा व्यक्ति : अपने लोकनि परिस्थिति बुझियौक। हमर निवेदन अछि (तीनू गोटय के कहैत) परिस्थिति बुझियौक।

दोसर लोक : बुझैत छियैक। मुदा पहिने हम राजनीति करब।

सांवरिया : नै:। पहिने हम प्रार्थना-सभा करब।

पहिल लोक : नै:। पहिने नाटक हुएत।

दोसर लोक : नै। पहिने हम....

सांवरिया : पहिने हम।

पहिल लोक : पहिने हम।

अफसर : देखै जाउ। अपनामे एना झगड़ा-झंझट करैत जायब, मंगनीमे सब टा गड़बड़ भऽ जायत। पुलिस हस्तक्षेप करत आ सब टा नाश भऽ जायत। सभक प्रोग्राम अनेरे फेल भऽ जायत। फल हुएत जे तीनूमे सँ बचो गोटय किछु नहि कऽ सकैत जायब। (किछु सोचैत) दोसर बात, जे समयक मोल बूझी। एतेक कालसँ एतेक रास लोक ठाढ़ छथि। अहाँ लोकनि तमसा जयताह।

पहिल लोक : (किछु सोचैत) किऐक ने हमरा सब एकर समाधान प्रजातंत्री उपायसँ कऽ ली, (अफसर के पूछैत छैक)

अफसर : उचिते किने! अपन देशक आदर्शो तँ प्रजातंत्रे अछि। कहू। की होयबाक चाही।

पहिल लोक : किऐक नहि हमरा लोकनि उपस्थित दर्शकसँ वोट करा ली ?

अफसर : से की ? ताहिसँ ?

पहिल लोक : पब्लिक जे चाहय, सएह कार्यक्रम पहिने हो। वोट भऽ जाय। एहिसँ जनताक रुचिक पता सेहो चलि जायत आ' स्वयं मे ई शुद्ध जनतांत्रिक व्यवस्था सेहो भेल।

(ओकर एहि प्रस्तावसँ कुनूक चेहरा उड़ल जकाँ बुझाइत छैक। तेकरा अफसर पढ़ि लैत छैक आ युक्ति पेश करैत छैक)

अफसर : नहि, हमरा विचारे तँ ई उचित नहि हएत। व्यवहारिको नहि। मतदानसँ ओझरौहटिये टा बढ़त। आपसी मतभेदे गंहीर हएत। हमरा विचारसँ अपना देशमे एक टा बड़ नीक परम्पराक शुभारंभ भेल अछि। आ, निश्चिते हमरा लोकनि के ओही परम्परा के मजगूत करबाक चाही।

नवो एक गोटय : कोन परम्पराक महाशय ?

अफसर : निर्विरोध चुनावक परम्पराक।

नवो एक गोटय : (बीचहिमे) अलबत्त ! एँ यौ, एक-एक टा सीट लेल गाहीक गाही उम्मेदवार ठाढ़ होइत छथि तैसे चुनाव क्षेत्रमे, एक-दोसरा उम्मीदवारक लठिधर आ' हँसेरीक संघर्षसँ चक्कू आ' बम-पिस्तौलसँ आतंक पसरल रहैत अछि कतेक कैँ अनेरे अपटी खेतमे प्रान चलि जाइत छैक आ' अपने फरमा रहल छी निर्विरोध चुनाव ...

अफसर : (किंचित उद्विग्न होइत) हम ई कखन कहल जे से स्थिति सबठाम बहुत छैक। मुदा छैक। एखनहि अपना एक प्रांतमे नेताक चुनाव बड़ आदर्श ढंगसँ खूब शालीन आ' स्नेहपूर्ण वातावरणमे निर्विरोध सम्पन्न भेलए। आ' हमर विश्वास अछि बल्कि भविष्यवाणी जे, एहि घटनाक प्रभाव पूरा देशक भावी चुनाव पर बड़ गंभीर रूपेँ पड़त।

नवो एक गोटय : मतलब जे वोट नहि कराओल जाय ?

अफसर : हँ, एखन हमरा लोकनिक कर्तव्य अछि जे उपस्थित दर्शक केँ ऊबियायसँ बचाबी। ई लोकनि आब ऊबि रहल छथि। क्रोधित भऽ रहल छथि।

पहिल लोक
दोसर लोक
साँवरिया : तँ हम की करी ? प्रोग्राम तँ हमर तय छल। (तीनू एकहि संग कहैत छैक)

अफसर : (तीनू के पोल्हबैत जकाँ) कोनो बात नहि। अहाँ तीनू गोटेक प्रोग्राममे कोनो अन्तर नहि अछि। एक्के अछि। एक्के बातक तीन पहलू।

तीनू : तँ आखिर हम करी की ? (एकहि संग)

अफसर : कहैत छी, अहाँ लोकनि जनैत छियैक (रहस्य सुनयबाक मुद्रा मे) जनता राजनीतिसँ बोर भऽ चुकल अछि। जखन कि ओ धर्मकेँ एखनो खूब मानैत अछि। जनता एखनो घोर धर्म प्राण अछि आ' कला प्रेमी सेहो। ओ बुझू जे आकंठ अछि। तँ हम तँ विचार दएब देब जे राजनीति अहाँ पहिने कऽ लियऽ (दोसर लोक के देखैत)

साँवरिया : (चिंतित आ' अगुतायल भावेँ) मुदा पहिने राजनीति होमऽ लगतैक आ' एही बीच कतहु हमर महान नेताक प्राण छुटि जानि, तखन ? तखन हमर ई प्रार्थना सभाक एतेक रास लोकक भावनाक की हएत ? की हएत प्रार्थना सभा ?

नवो एक गोटय : प्रार्थना सभा शोक-सभा भऽ जायत। सिर्फ बाते बदलत किने ? लोक तँ नहि बदलता। शोको सभा तँ आखिर करबे करब....

साँवरिया : अहाँ बाते ने बुझलिऐ। ओजी जनिका लेल हम प्रार्थना करऽ चाहैत छियनि सएह मरि जयताह तँ हमर एहि प्रार्थना सभाक की दाम रहि जायत ?

नवो एक गोटय : रहैबे किलो। जे भाव पलांकी साग़क चलि रहल छैक। आइ काल्हि। (ताहि पर साँवरिया ओकर नरेटी पकरबा पर बिर्त्त छैक आ मारि पड़ऽ लगैत छैक सार....एखने हम।)

अफसर : (बुझबैत जकाँ) सुनू तँ। अगुताइ जुनि। दाम रहत यौ —दाम रहत। सभक कार्य होयबाक चाही। सभक। ऐना अधैर्य भेलासँ थोड़े हएत। बल्कि आरो बिगड़िये जायत कार्य। (क्षणिक थमि क') सेहो प्रार्थना तऽ भगवान आ भक्तिक वस्तु थिक। जनता कखनहु आँखि मूनि कऽ कान बन्द कऽ कऽ प्रार्थना करऽ लागि जा सकैत अछि।

बोर नहि हुएत एको रत्ती। तखन बाँचल नाटक। तेँ नाटक सबसँ अन्तमे राखू।

पहिल लोक : किएक, नाटक सबसँ अन्तमे किएक यौ ?

अफसर : एहि द्वारे जे, जतेक लोक एतऽ उपस्थित छथि से बिना नाटक देखने तँ जाइत नहि अयताह। तावत धरि ठाढ़ रहताह।

बीचो एक गोटय : किऐक ? जनता बड़ बूड़ि जे एतेक-एतेक काल ठाढ़ रहत ?

अफसर : नहि। नाटक सबके नीक लगैत छैक तेँ ठाढ़ रहत। दोसर बात जे एखन जे एहुबका सामाजिक समस्या अछि ताहि मे इएह टा रस्ता व्यावहारिक हुएत। बुधियारी इएह थिक। अनेरे 'हम तँ हम'क विवादमे झगड़ा आ' फेर दंगा-फसाद किएक हो ? आ' तखन शान्ति-व्यवस्थाक लेल पुलिसे के ने बजबऽ पड़य ?

पहिल लोक : (किंचित लाचार आ उदास होइत) लेकिन भाय साहेब, नाटके सबसँ पाछाँ ? सबटा प्रबन्ध कएल-धएल हमर आ' हमरे नाटक सबसँ पाछाँ। वाह ! कहबी छैक जे जकरे मायक श्राद्ध तकरे पात भात नहि ? कमाल करैत छी भाइ साहेब !

अफसर : भात किएक नहि ? अहाँ के तऽ सभे लाभ अछि। तावत, यावत ई दुनू कार्यक्रम समाप्त हेतैक बहुत भीड़ जुमि जायत नाटक बेरमे। बेसम्हार नेँ भऽ जायत भीड़।

पहिल लोक : मुदा भाइ साहेब, भीड़ तऽ राजनीतिक लेल जरूरी होइत छैक। नाटकक वास्ते तँ हमरा दर्शक चाही। आ' ई एतेक रास लोक अहाँकि कम बुझाइत अछि। (उपस्थित समुदायकेँ देखैत)

अफसर : सेहो बेस। मुदा आरो दर्शक जमा भऽ जाथि ताहिमे अहाँकेँ आपत्ति कोन ? नाटक आरो जमत।

(तावत दोसर लोक आगाँ बढ़िकऽ कहैत छैक)

दोसर लोक : आ' ओहुनहुँ, ई श्रोता सभ हम्मर छथि।

साँवरिया : (तमैत कहे) नहि, ई सभ गोटय हमर छथि।

पहिल लोक : नहि। ई दर्शक हम्मर छथि।

अफसर : (किंचित चौंकाइत) ओह्। एहिमे कोन कंट्रोवर्सी छैक भाय दर्शक, दर्शक छथि। एहि सबजनियाँ पब्लिक प्लेसमे ठाढ़ छथि। एहिमे की बहुत विवाद छैक जे ई दर्शक ककर ? (शान्त उत्तेजनाक छवि देखि कऽ) ई दर्शक सभक छथि किऐक तँ अहाँ तीनू गोटेक अपन अपन उद्देश्य अछि। आ' से काज तीनू गोटय के एही दर्शक वा जनतासँ चलय-वाक अछि। आ' से चलि जायत। आ बड़ सुन्दर नकी चलि जायत। तखन एकर की विवाद जे ई दर्शक ककर छैक ? ई दर्शक अहाँ तीनू गोटेक छथि।'

साँवरिया : मुदा से कोना संभव छैक यौ ? ई कोना भऽ सकैत छैक ? ई लोकनि एकहि संगे हमरा तीनू गोटेक कोना बनि सकैत छथि ?

अफसर : किऐक नहि ? एहिमे दिक्कतिये की छैक ? बेरा बेरी अहाँ लोकनि हिनका सबकेँ संबोधित करबनि। आ' यावतकाल धरि अहाँ लोकनिक अपन अपन कार्यक्रम चलैत रहत तावत ई लोकनि अहाँ लोकनिक बनल रहताह। एकक खतम हुएत, तँ दोसर गोटेक बनि जयताह। एहिना फेर तेसर गोटेक.......(मुग्ध भावेँ) अपने देशक पब्लिकक ई महानता जे काज धंधा छोड़ि कऽ एतेक-एतेक काल प्रोग्राम कयनिहारक सहयोग करबा लेल ठाढ़ रहथि। पब्लिकक ई महान सहयोग अहाँ लोकनिकेँ सहजहि प्राप्त अछि। लाभ उठबै जाइ जाउ।

साँवरिया : (कपार पर आंगुरी घुमबैत) मुदा हमरा मुंडमे ई नहि रहल अछि अहाँक ई बनरा-बाँट !

अफसर : (किंचित अपमानित अनुभव करैत) जेना मानि लियऽ जे पहिने राजनीति हेतैक तँ ई सभ श्रोता एहि साहेबक भऽ

जयघिन (दोसर लोकके देखबैत), तखन अहाँक प्रोग्राममे अहाँक प्रार्थना कयनिहार लोक आ अन्तमे सबटा पब्लिक नाटकक दर्शक बनि जयतैक—ओइ साहेबक लोक भऽ जयतैक। (ओ पहिल लोक दिश आँगुर देखबैत कहैत छैक)

पहिल लोक : (जेना किछु सोचैत बिहुँसैत) चलू। ई नीके व्यवस्था भेल। नीके बात। अन्तमे नाटक रहलासँ सबसँ बीछल-बीछल दर्शक आखिरमे खाली नाटकेक रहि जयताह। बेजाय नहि। जे कार्यक्रम उबियबैबला रहय सएह होयबाक चाही पहिने....

दोसर लोक : तखन तँ हमही अन्तमे राजनीति करब।

साँवरिया : ईह्, आब तँ हमही अन्तमे प्रार्थना-सभा करब।

पहिल लोक : नहि। पहिले व्यवस्था ठीक अछि। ओहुनो तँ आइ-काल्हि जीवन आ समाजमे बमैक बास्ते लोक सबसँ पहिने राजनीतिये आरम्भ करैये। रिटायर्ड डी० एम० सँ लऽ कऽ घूस लेबाक आरोपमे सस्पेंड भेल कोनो थाना इन्चार्ज वा आन कोनो पुलिस अधिकारी सभ। पहिने मोहल्ला बार्डक राजनीति, तखन नगर-राजनीति।

पहिल युवक : ओ भाय साहेब सुच्चा गप्प कहलथिन्ह। हमरो अनुभव सएह अछि। ठीक।

प[illegible]ल लोक : बेठीक विवेक कहब बंधु। एहना लोक सबमे, जिनकर राजनीति नहि जमैत छनि से कोनो ने कोनो फर्मक मालिक वा ईश्वर वा जननेता के माला पहिरा कऽ प्रार्थना आ' आरती पर उतरि आइत छथि। हुनका लेल साप्ताहिक एखबार छपऽ लगैत छनि। जनता तँ आइयो धर्मप्राण अछि। कोनहुँ प्रार्थना हो, झूमि-झूमि कऽ आँखि मुनने शब्द-शब्द पर मूड़ी डोलैत रहैए। आ एहि तरहेँ नाटकक जन्म होइत छैक आ से जनता देखैए। बेर बेर देखैए एहि प्रकारेँ राजनीति आ' धर्मसँ शिक्षा लैत सावधान बनैए।

दोसर लोक : (खौंझाइत) अहाँ तँ भाषण चालू कऽ देलियैक औ! आखिर अहाँ की चाहैत छी?

पहिल लोक : इएह जे पहिने अपने राजनीति शुरू करू। तखन ओ प्रार्थना-सभा करथु आ' अन्तमे हम नाटक करब।

(अफसर विशेष भंगिमासँ दोसर लोक के देखैत थैंक्यूप्रोत्साहित करैत छैक तखन तीनू दावेदार क्रमशः बजैत छैक)

दोसर लोक : बेश तँ पहिने हम राजनीति शुरू करैत छी?

साँवरिया : ठीके छैक। तखन हम प्रार्थना-सभा करब।

पहिल लोक : ठीक छैक। तखन अन्तमे नाटक हेतैक।

अफसर : (आगाँ बढ़ैत) ठीक। ई व्यवस्था उचित। आ' एहन कि एतऽ परिस्थिति अछि, एखन, ई व्यवस्था खूब सोलरायल आ सभक पक्षमे भेल-ए। (ओ सन्तुष्टिक स्वास घीचैत छथि।)

दोसर लोक : तखन, आरम्भ करू हम? (अफसर आ दर्शक के पूछैत) उपस्थित सज्जन वृन्द........

(कि तावतहि एकटा दुःखी थाकल-हारल भिखारि सन वृद्ध एक दिससँ दर्शक सभके हटबैत आगाँ अबैत छैक। सभक ध्यान ओकरा दिस चलि जाइत छैक। ६० बर्षसँ कम केर नहि हेतैक। ओकर एहि आकस्मिक उपस्थितिसँ 'दोसर लोक' खौंझा जाइत छैक आ' क्रोधित भऽ जाइत छैक)

दोसर लोक : हौ बुढ़ा! की छऽ एतऽ? चलऽ ओम्हर कातमे जाकऽ ठाढ़ भऽ जाऽ। भाषण सुनऽ।

वृद्ध : नै हजूर, हम भाषन सुनऽ नहि आयल छी। हम त बड़का विपत्तिमे पड़ल छी सरकार। हमर बेटा थाइ तीन दिनस, जानि ने कतऽ निपत्ता भऽ गेल-ए। तकरे हम ताहै छियै जे कहुना कऽ ओकर पता लागि जबतै....।

दोसर लोक : रे त ओकरा पता लगयबाक ई कोन जगह भेटलहु-ए तोरा? अरे ओ गेल हेतऽ पड़ा कऽ बम्बई फिल्ममे राजेश खन्ना बनऽ लेल। एतऽ पता चलतऽ ओकर? जा, आ' एखबार

सबमे अंगरेजीमे हिन्दीमे सबमे, ओकर फोटो छपा दहक ....मुदा एतऽ सँ एखन चलि जा। (कोलाहल) एतऽ एखन बड़ जरूरी कार्यक्रम चलि रहल छैक। आइ काल्हि सभ छौंड़ा सब पढ़ा-पढ़ा कऽ बम्बइये जाइ-ए।

वृद्ध : नै हजूर ! हमर बेटा तेहन नै है।

दोसर लोक : अच्छा बाबा, बड़ साधु छऽ तोहर बेटा सँ जा नै तकहक ग ने। खबरि छपावऽ एखबारमे।

वृद्ध : एखबारमे त बहुत रुपैया लै है। ओतेक टाका हम कहाँ पाबी बाबू। कहाँ स लाउ ?

साँवरिया : त रेडियो टीसन जा ओहीमे सूचना प्रसारित करबा दहक। मुदै छियै ओतऽ रुपैया नहि लगैत छैक ! ओतहि जा। एतऽ सँ मुदा जल्दी हटऽ। किएक तँ एतऽ बड़ जरूरी प्रार्थना सभा सेहो होमऽ बला छैक। बल्कि ठहरि कऽ तोहूँ ओहिमे भाग लइए लए पाछाँ जइहऽ रेडियो टीसन।

वृद्ध : ओत्तहि स त आबि रहल छी सरकार। ओतऽ कहलथि जे ई फारम (फारम देखबैत) भरवाऽ कऽ आनऽ। ई छियै अंगरेजी बहादुरक फारम। हम पढ़ल नै लिखल। कतेक लोक कें गोड़ हाथ धयलौं त एक गोटय ई फारम भरि देलनि। लऽ गेलियै एतेक परचण्ड रौदमे। चलि नहि होअय बाटमे तीन ठियाँ बैसैत पहुँचली रेडियो टीसन। देलियै। त ओ साहेब ऊनटा-पुनटा कऽ देखलकै आ' घुरा देलक जे एकराभे थाना का मोहर कतऽ है ?

पहिल युवक : देखी बाबा फारम। (ल' कऽ देखैत) समस्या हिन्दुस्तानी आ' फारम अंगरेजी।

वृद्ध : हमरा की मालूम जे एकरामे थानाकें मोहर लगाबऽ पड़ै है ओकरा तखने फारमे दै बेरी कहि देब उचित नै छलै ? हम बूड़ लोक बिपत्तिक मारल। कतेक फिफिऐली ओ नहियें टा मानलक। की करिती ? फेन गोड़ धिसियबैत लंगड़ाइत थाना पुलिस कतऽ। के सुनैहय ? गरीबक बातकें के सुनै है बाबू ?

पहिल युवक : की भेल, थाना पर की भेल ?

वृद्ध : मोहर दै ले कहलियै त बाजल जे मोहर मंगनीमे मिलै है बूढ़ा ? थानाक मोहर है कि थोनो दोकानक ? आनऽ बीस गो रुपैया तखन फारम पर मोहर लगायबऽ।

पहिल युवक : (सहानुभूति आ' क्रोध सं) तखन फेर ?

वृद्ध : की होइतै बच्चा। हमरा लग त खाइकें पाइ छैहे नै कहाँ स दितिअइ ? (ओ लगभग बकोर लागि कऽ कानऽ लगैत छैक। चारू कात आशा उम्मीद सँ देखैत छैक आ थाकि कऽ ओही ठाम बैसऽ लगैत छैक)

बगौ एक गोटय : किएक नपत्ता भेल ? एनके टा बेटा अछि बाबा अहाँके ?

वृद्ध : ई दोसरका बेटा छेलै। बड़ तेजगर। सब गुरुजी सब ओकर परसंसे करै छेलै। कोलेज गेलै आ ओइ दिनसँ ओ कहाँ गेलै से पतेने चलल। हा भगवान !

बगौ एक गोटय : आ अहाँक दोसर बेटा ? (साँवरिया आ' दोसर लोक ओकर एहि बातसँ खौंझा रहल छैक आ क्रोधित छैक

वृद्ध : (जोरसँ साँस छोड़ैत) ओऽऽ ? ओ त उहे जे पौहुतरिमे भेल छेलैए। इसकूल कोलेज सबमे बन्नूक चलल छेलैए ताहीमे ओकरो बन्नूकलगा देलकै (कनीक याद करैत जकाँ) हमरा सब त ओकर मुँहों ने देखि सकलियै घुरि कऽ। ओकर माय गाय जकाँ हुकड़ि हुकड़ि कऽ प्रान दऽ देलकै। हमरा सब ओकर मुँहों कहाँ देखलिये घुरि कऽ (ओ कानऽ लगैत छैक)

दोसर लोक : (जेना एही अवसरक ताकमे हो आ' एकर लाभ उठबैत बाजऽ लगैत छैक) हे ! देखि लियौ समाजक लोक ! देखि रहल छियै अन्यायक पराकाष्ठा ! कतेक बापसँ ओकर बेटा बिछुड़ि गेलैक। गोली खयलक। जान देलक। तैयो हमरा अहाँ, सभकें ई लोकनि खोखे भरोस दैत छथि। आश्वासन जे चिन्ता, दुख आ घबड़ेबाक बात नहि। पँच-पँच सामाजिक क्रान्तिक दौरमे, महान परिवर्तन मार्गमे

ई सभ होइतहि छैक। (वृद्ध के एक दिस इशारा करैत कहैत छैक) ओम्हर जाकऽ ठाढ़ भऽ जा। हमर भाषण सुनऽ। शान्ति भेटतऽ। चित्त स्थिर हेतऽ।

वृद्ध : (क्रोध आ' लाचारी सँ) केहन राक्षस छी यौ नेता जी! बताउ। हम अपन बेटा ताकऽ आयल छी आ' अहाँ हमरा भाषण सुनबै छी। बोल दैत छी। हुए त दियऽ ने बीस गो रुकै। कबौं दियऽ। ऐ बुढ़ारियोमे कमा कऽ घुरा देब। दियऽ ने बीसटा टाका। जाकऽ विरुद्ध थाना बला के, आ' कारम पर मोहर दिया क' रेडियो स सुनवा दियै अपना बेटाक सादेसे (अकस्मात जेना आरम विस्मृत होइत) हमर बेटा! जे कि सुनतै-चाहे कतहु हो, दौड़ले चलि आउत। ओ यमहि चला गेना नै है। हमरा बहुत मानै है।

दोसर लोक : (क्रोधसँ) बड़ा मोश्किल। अरे की अपन बेटा पुराण लऽ कऽ बैसि गेलऽ हो? जा ने एक रत्ती कात भऽ जा ने। ककरोसँ टाका माँगि लए। हम कतऽसँ देबऽ? राह बता त आगे चल। हमरा लग रुपैयाक गाछ अछि की? जा हटऽ एतऽ सँ। कार्यक्रम होमऽ दहक। (गला खखसि कऽ) हँ तँ भाय आ' बहिन दाई....

बयो एक गोटय : (व्यंग्य सँ) भारी अफसोस नेताजी। एखन धरि एकहु टा बहीन जी नहि पधारि सकलि छथि।

दोसर लोक : (अनठियबैत) देखि रहल छी आदमीक हालति? मालो-जालसँ बत्तर। एखनहि एहि पिता तुल्य वृद्ध के अहाँ लोकनि देखलियनि? देखलियनि बेचारेक दुख, विपत्ति आ' लाचारी? इएह टा नहि छथि। समाजमे बहुतो लोक छथि एहन जे मरि मरि कऽ जीबि रहल छथि। दिन राति शोषणक महाचक्रमे पिसाइत जीबि रहल छथि। हुनका ज्ञान नहि, शिक्षा नहि....। तेँ आवश्यक अछि राजनैतिक समझदारी-जग चेतना। जाहिसँ कि हमर कष्ट,समस्या दूर भऽ सकय। अहाँ लोकनिकेँ बुझल नहि हएत जे जाहि समाजमे मनुक्खक राजनैतिक चेतना आ समझदारी जतेक

कम रहैत छैक ताहि समाजक जनताक सत्ता द्वारा ओतबे बेसी शोषण होइत छैक। तेँ हम सबने सँ, बेर-बेर कहि रहल छी जे हमरा लोकनिकेँ सचेत रहबाक अछि। हमरा लोकनि के जाग्रत रहबाक अछि आ' निरीह निरक्षर अशिक्षित जनताकेँ बुझयबाक अछि सबके। गामक शोनि-हारकेँ शहरक निम्नवर्गक लोक सबकेँ जे ओ अपन अधि-कारकेँ पयबाक वास्ते डाँड़क दट्ठा बान्हि कऽ ठाढ़ भऽ जाथु। आ' लड़बा लेल तैयार भऽ जाथु।

बयो एक गोटय : लड़बा लेल तैयार भऽ जाथु। मुदा लड़थु नहि। (व्यंग्यसँ) खाली लड़बा लेल तैयार रहथु।

दोसर लोक : (क्रोधसँ) देखू सभामे उपद्रव सुनि करू। नै तँ अहाँ सन-सन उपद्रवी के ठीक करब अबैए हमरा। (ओ बुनू तीनू दिस एक बेर नजरि दौड़बैए आ' जेना अपना आदमी सबके अपना अपना स्थान पर मोस्तैद तैनात पाबि कऽ निश्चिन्त भऽ जाइत अछि) हँ, तँ हम कहैत रही लड़बा लेल तैयार रहू। नहि तँ ई संसार नहि बदलत। हम कहैत छी, हमहीं किएक हमरे जकाँ संसारक सभ महान चिन्तक दार्शनिक सभ सेहो इएह कहने छथि जे बिना एकरे नहि हएत समाजक दुःख दूर। नहि भ' सकत मनुक्ख एहि शोषण-चक्र-चांगुरसँ मुक्त आ ने राजनैतिक चेतना जगयबामे सक्रिय साकांक्षा राजनैतिक चेतना जगयबामे अहाँ अपन तन-मन-धन सब किछु लगा दियऽ। तखनहि लोकक दुख दूर भऽ सकतैक आ' दुनियाँ बदलि सकतैक।

(तावतहि साँवरिया माइक लग आबिकऽ दोसर लोक के कानमे किछु कहैत छैक। भाषण देनिहारक चेहराक भावसँ बुझा रहल छैक जे ओकरा भाषण जल्दी खतम करबा लेल कहि रहल छैक। आ' ओ 'तुरन्त खतम कऽ रहल छी'—क आश्वासन दऽ रहल छैक मुदा बजिते जाइत छैक। साँवरियाक चेहरा उदास भऽ जाइत छैक। ओ बेर-बेर

अपन गरदनि हुंगोधि रहल अछि, जेना कि ओकरा कंठमे कुलकुली उठि गेल होइक)

दोसर लोक : हँ त भाय लोकनि ! सबसँ बड़का वस्तु होइत अछि राजनीतिक बुझाऋपन । राजनीतिक ज्ञान । आ' से ज्ञान जनताक बीच बढ़ायब....

(अनचोके मे साँवरिया माइक झपटि लैत छथि । कनीक झीका-तिरी सेहो होइत छैक मुदा अन्ततः माइक साँवरियाक हाथमे आबि जाइत छैक ओ जल्दी जल्दी बाजऽ लगैत अछि)

साँवरिया : (हरबड़ाएल सन कामे) बड़ड भ' गेल श्रोता लोकनि ई नेताजी तँ पुरा समय सोंटि गेलथिन । अहाँ दुआरे, पहिने कंट्रैक्ट भऽ गेल छलैक । तैयो ओ एकरा नहि निबाहलनि । क्यो जिम्मेदारी बुझबे ने करैत छैक तँ । अहाँ लोकनि जनिते छी जे एखन अपना सबक मोलामे-कतेक पैघ उत्तर-दायित्व आओर पुनीत कर्तव्य ठाढ़ अछि ? अपने लोकनि सभ गोटय इहो जनैत छी आ' चिन्तासँ बताह भऽ रहल छी जे हमरा लोकनिक महान नेताजी बड़ा अस्पतालमे अब-तब हालत मे अस्वस्थ छथि । वैह आत्मा जे देशवासी लोकनि के भयानक महा निशाक महान्धकारमे प्रकाश प्रदान कयलनि । हमरा लोकनिकेँ समृद्ध बनौलनि । आ' खराबी तथा भ्रष्टाचारसँ लड़बाक नैतिक शक्ति प्रदान कयलनि । एहेन युग पुरुष । अपन एहेन अमर नेता आइ मरि रहल छथि । तिनके दीर्घायु बनयबाक लेल हमरा लोकनि सब गोटय एतऽ सामूहिक नागरिक प्रार्थना करबाक लेल एकट्ठा भेल छी । एही उद्देश्य सँ जे हुनक प्राण-रक्षा भऽ सकनि— हमरो लोकनिक औदी हुनका भेटि सकनि : त्वमेव माता च पिता त्वमेव... **(पाठ करैत)**

क्यो एकगोटय : मुदा ए' यौ भाय साहेब, जखन अहाँक महान नेता अपने अमर छथिये तखन हुनक प्राण रक्षा लेल एतेक रास लोकके व्याकुल भऽ कऽ प्रार्थना करबाक की जरूरति ? अमरकेँ

तँ अबैं होइत छैक जे मरय नहि । ई तँ ओहुनो नहियेँ मरताह । अहाँ किएक मरल जा रहल छी हुनका लेल ? निश्चिन्त रहू ।

साँवरिया : (क्रोधसँ बेचैन) बड़ नास्तिक बुझाइत छी यौ । एहन नास्तिक स्वर ! हा नटवर नागर ! एहने अनास्थावादी चरित्र सभ मिलि कऽ हमर संपूर्ण राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक आ' सांस्कृतिक मूल्यकेँ ध्वस्त कऽ देलक अछि । एहन लोक सब सांस्कृतिक शत्रु होइत अछि । हमर महान नेता एहने संस्कृति-विरोधी शक्तिक विरुद्ध हमरा लोकनि के एकजुट होबऽ आ एकरा सँ लड़बाक मार्ग प्रशस्त कयलनि आ' तकरा अपना चरित्र बल सँ आलोकित प्रज्योत कयलनि । युग-युग धरि हुनक ई राष्ट्र-सेवा हमरा लोकनिक पथ प्रदर्शक बनल रहत । **(चेतबैत जकाँ ओहि युवक दिस संकेत करैत)** एहन लोक सबसँ हमरा लोकनि केँ चेतल रहबाक चाही चौबीसो घंटा (**तखने जेना फेरो ओकरा अपन रोगी नेता मन पड़ि जाइक । भक्ति भाव सँ ओ आँखि मूनि लैत अछि । हाथ जोड़ि कऽ ऊपर उठा लैत अछि, आ व्याकुल भऽ बजैए)** ईश्वर ! हिनका, हमरा सङ्गे रहबा लेल सदा सर्वदाक वास्ते छोड़ि दियनु जाहिसँ कि हमर जीवन-पथ, हिनक उपस्थितिसँ शुभ-प्रकाशसँ आलोकित रहय । ई सदा हमरा लग रहथि ।

क्यो एक गोटय : तँ की, अहूँ अमर छी प्रार्थना-पुरुष जी ? नहि तँ कोना रहि सकबै दुनू गोटय सदा सर्वदा संग, अपने लोकनि ?

साँवरिया : (खिसियाइत) अहाँ लोकनिमे एकहु रती शिष्टाचार आ' मर्यादाक संस्कार नहि अछि । धिक्कार अछि । कहू भला ! अहाँ लोकनि एतेक टा पुण्य कार्यक लेल एतऽ उपस्थित छी आ' अहाँ वाण जकाँ अपन वचन चला-चला कऽ हमर ई यज्ञ भ्रष्ट करऽ चाहैत छी ? हिंसाक वातावरण करऽ चाहैत छी ! अहाँ लोकनि तँ सद्यः बुझाइत छी जेना महिष-

मुनिक गण, राक्षस-गण होइ आ' उपद्रव उत्पात मचा रहल होइ। अस्तु जे हो। (सस्वर पढ़ैत छैक)

छमा बरन को चाहिये,
छोटन को उतपात।

भाइ लोकनि, बहिन लोकनि आ' अन्यान्य सज्जन वृन्द! आजुक ई उपलक्ष हुनकहि खातिर थिक, अपन अमर शाश्वत अस्वस्थ नेताक स्वास्थ्य लाभक प्रार्थनाक हेतु। आइ एतऽ हमरा लोकनि भगवानसँ अपन ओही महान् नेताक और्दा माँगि, सामूहिक प्रार्थना करबाक संकल्प लऽ कऽ एतेक बेसी संख्यामे उपस्थित भेल छी। प्रार्थना करबाक लेल। (ओकर एहि घोषणापर एहि बेर दर्शक गण एक दोसराक मुँह ताकऽ लगैत छैक जेना सब सोचि रहल हो, बेश मूर्ख बनाओल गेल। ताही बीच एकटा जोरगर आवाज अबैत छैक)

बचो एक गोटय : नहि-नहि प्रार्थना करऽ नहि, हमरा सब नाटक देखऽ आयल छी, नाटक!

बचो दोसर गोटय : हमहूँ नाटके देखऽ आयल छी।

कएक स्वर : (एकहि संङ) हमहूँ नाटक देखऽ आयल छी।
हमहूँ हमहूँ हमहूँऽऽऽ

हमरा लोकनि सब गोटय नाटक देखऽ आयल छी।

एक स्वर : चलू भाइ! आब नाटक चालू करू। (फेर तखने हल्ला उठऽ लगैत छैक—"नाटक शुरू करू, जल्दी नाटक शुरू करू।")

(एही बीच भीड़सँ नेता निकलि गेल रहैत छैक। आ किछुए सकेण्डक भीतर, पाछाँ दिससँ खूब जोर सँ आवाज आबऽ लगैत छैक 'भागै जाउ भागै जाउ। पुलिस आबि गेलैक। सब गोटय एतऽसँ पड़ाइ जाउ। भागि जाइ जाउ एतऽसँ। ई पब्लिक प्लेस छैक, अशान्त नहि करियौ। हटू भागू एतऽ सँ। एतऽ ई सब किछु नहि हुअबाक चाही। भागू एतऽसँ... बलवा नहि करू, पुलिसक सीटी बजय-बाक ध्वनि अबैत छैक आ' वैह स्वह फेर कहऽ लगैत छैक— भगै जाउ। लाठी चार्ज हुएत...एक मिनटक समय देल जाइत अछि तकराबाद लाठी चार्ज। पुलिसक सीटी लगातार बजैत छैक। भगदड़ मचि जाइत छैक।

एही भागा-भागीमे कात दिस बैसल बूढ़ के धक्का लगैत छैक। ओ सम्हरैत उठैत अछि आ लग सँ जाइत एक गोटय के पुछैत छैक)

बूढ़ : हमर बेटा कोना मिलतै बाबू?

(ओ व्यक्ति ओकर उपेक्षा करैत चलि जाइत छैक। बूढ़ दुःखी आ' अनिश्चित जकाँ ठाढ़ रहैत अछि। तावत ओकरा दिस 'पहिल लोक' अबैत छैक। ओकरो सँ बड़ आर्त्त भावेँ पुछैत छैक)

बूढ़ : आब हमरा बेटा ध रेडियोमे के बोलतै? हमर बेटा कोना मिलतै बाबू?

पहिल लोक : (बूढ़क बाँहि स्नेह सँ धरैत कहैत छैक) चिन्ता नहि करू बाबा! हम सब अहाँ संङे थाना कोतवाली चलैत छी आ' ओतऽ सँ चलब आकाशवाणी।

(तकरा बाद बेरा बेरी सब अभिनेता, बूढ़क चुमू कात जमा भ' जाइत छैक मुदा ओहिमे 'साँवरिया' 'दोसर लोक' तथा 'अफसर' नहि छैक। सब कलाकार बूढ़ के आगाँ लऽ चलैत सामूहिक स्वरमे गाबऽ लगैत छैक)

"आवहु सब मिलि रोवहु भारत भाई,
हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।

□ □